अन्तराशब्दशक्ति

जनवरी-फरवरी (संयुक्तांक 2019) मासिक वेब पत्रिका

ऋतुराज बसंत की पुरवाई
रंग बसंती लेकर आई
छटा पलाश बिखेरे जग में
और सुख मन के कानन में

*तुम क्यों आए हो बसंत?

www.antrashabdshakti.com

पुलवामा आत्मघाती हमले में शहीद हुए जवानों को

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

अंतरा शब्दशक्ति

अन्तराशब्दशक्ति

मासिक वेब पत्रिका

वर्ष -2 अंक-5 मूल्य 25/-
जनवरी-फरवरी(संयुक्तांक 2019)

अन्तरा-शब्दशक्ति परिवार

संस्थापक एवं प्रधान संपादक
डॉ प्रीति सुराना
(हिन्दी, साहित्य एवं समाज सेवी)

सह संस्थापक
समकित सुराना
(गौसेवी एवं समाजसेवी)

सहयोगी एवं सलाहकार

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
(पत्रकार, लेखक एवं हिन्दीसेवी)

कैलाश बिहारी सिंघल
(लेखक एवं साहित्यसेवी)

ब्रजेश शर्मा 'विफल'
(लेखक एवं साहित्यसेवी)

कीर्ति वर्मा
(लेखिका एवं साहित्यसेवी)

पिंकी परुथी 'अनामिका'
(लेखिका एवं साहित्यसेवी)

अदिति संजय रूसिया
(लेखिका एवं समाजसेवी)

हेमंत बोर्डिया
(लेखक एवं साहित्यसेवी)

शिखा जैन
(हिन्दीसेवी एवं समाजसेवी)

ग्राफ़िक्स:- डॉ. प्रीति सुराना

•जय हिन्द-जय हिन्दी•

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

संपादकीय 4
पुलवामा आत्मघाती हमला (विशेष) 5-8
काव्य खण्ड 9-18
बालकविता खण्ड 19
प्रेरक विचार 20-21
कथा-कहानी खण्ड 22-27

नोट:-आगामी अंक होली एवं महिलाओं पर केंद्रित होगा जिसके लिए रचनाएँ फ़ोटो एवं मौलिकता के सत्यापन के साथ 28 फरवरी तक **antrashabdshakti@gmail.com** पर भेजें।

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

नोट:- पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी है। किसी भी कानूनी विवाद का क्षेत्र वारासिवनी रहेगा।

संपादकीय
सहेजने की आदत डालें

डॉ. प्रीति सुराना
संस्थापक:-अन्तरा शब्दशक्ति

परिवर्तन संसार का नियम है। जो आज है वो कल हो जरूरी नहीं। दिन का रात में बदलना रात का फिर दिन हो जाना इससे बड़ा कोई और उदाहरण किसी भी जीवित व्यक्ति के लिए नहीं हो सकता। कल और कल के लिए आज का होना अनिवार्य है। जो कुछ भी अभी घटित हो रहा वही पल पल बीता हुआ कल बनेगा और जो आने वाला पल है वही भविष्य है और चाहे बीता हुआ हो या आने वाला कल उसके लिए जरूरी है आज का होना ठीक एक परिकल्पना को सच करने के लिये आवश्यक सामग्री की तरह। ये बात और है को परिकल्पना के साकार होते ही वह एक खोज, एक याद, एक अतीत की उपलब्धि बनकर रह जाएगा। खैर,..!! समय ये सोचने का है कि आज और अभी के अलावा सब कुछ परिवर्तनशील है तो आज और अभी को सार्थक कैसे बनाया जाए। कैसे जीये कि जीवन में मलाल न रह जाए।

परिवर्तन का समय कोई नियत काल नहीं है बल्कि पल प्रतिपल है। अभी अभी ही साल बदला है, अभी अभी ही बसंत की आहट आई है। माघ में ही फागुनी बयार की दूर से आती सनसनाहट सुनाई देने लगी है। फाग रंगों की बहार लेकर आएगा, बासंती मधुमास जीवन मे उम्मीदों के रंग भरकर इठलाता हुआ गुजर जाएगा। सोचना ये है गुजरते हुए हर पल को यादगार, आदर्श और अमिट बनाने के लिए क्या किया जाए।

क्यों न सहेजने की एक बहुत खूबसूरत आदत डाल ली जाए। आज जो भी घट रहा है पारिवारिक, सामाजिक,राजनैतिक,आर्थिक,मानसिक और शारीरिक स्तर पर हर पल जो परिवर्तित हो रहा है उसे कुछ इस तरह लिख लिया जाए कि जो बदला वो क्या था और जो बदलाव हमारी ओर से अपेक्षित था वो क्या था? क्या जो अपेक्षित था वो सही और उसके लिए किए गए प्रयास पर्याप्त थे, या जो हुआ वो सटीक था, नहीं था तो क्यों नहीं?

यकीन मानिए, दस में से एक ने भी सिर्फ दैनिक जीवन के अनुभवों को डायरी पर लिख दिया तो उनका यह कार्य आने वाले कालखंड में मार्गदर्शक दस्तावेज बन जाएगा जो कि ये बताएगा कि अपेक्षा उपेक्षित सिर्फ और सिर्फ समर्पित हो कर किये गए प्रयासों या समर्पण में कमी के कारण होती रही है। फिर बात सपनो की हो या अपनो की, देश या समाज की हो या कल और आज की।

बस एक सोच है,.. सहेजा जाए जीवन से जुड़ी हर अच्छी बुरी घटना, सही गलत की बातों और हालातों को। कल हमारे बाद जब यादों की संदूक खोली जाए, तो धुंधली तस्वीरों और पीले पड़े कागजों में बिखरा पड़ा हो वो हर पल जो सचमुच बदला जा सकता था, शायद बीच का एक भी पल बदल दिया जाता तो सब कुछ, कुछ और होता।

इन्हीं संभावनाओं का नाम जीवन है किंतु उससे भी बड़ा एक सच ये भी है कि परिवर्तन संसार का नियम है पर दिन का रात में और रात का दिन में बदलने का क्रम और काल निश्चित है और जब भी उलझेंगे इन रहस्यों में अंतिम जवाब होगा ये तो नियति का खेल है, और हम आप फिर तलाशने लगेंगे आज और अभी को छोड़कर आने वाला कल, क्रम चलता रहेगा, विचारों का आरोह और अवरोह भी सतत याद दिलाता रहेगा कि परिवर्तन संसार का नियम है और जो न समझ पाएं वो रहस्य नियति,.. अतः चलते रहें जब तक संभव है, और हो सके तो सहेजने की आदत डालें चाहे तस्वीरों में, कलात्मकता में या चाहे लेखन में डायरी के पन्नों पर, किताबों में या सोशल साइट्स पर,...कभी भी पर कहीं न कहीं सहेजें जरूर पल-पल को,....!!!

डॉ. प्रीति सुराना
संस्थापक:-अन्तरा शब्दशक्ति

पुलवामा आत्मघाती हमला (विशेष गद्य व काव्य खण्ड)

पुलवामा आत्मघाती हमला
जिम्मेदार कौन या जिम्मेदार मौन

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
संस्थापक:-हिन्दी ग्राम

सरहद और संसद दोनों पर ही मानसिक हमला हुआ है, न अकेली घाटी दहल गई बल्कि उसी के साथ भारत की वो पीढ़ी भी दहल रही है जिसके ख्वाबों में सरहद पर जा कर देश सेवा करना आता है, वो भी दहल गए जिनके दिल में राष्ट्र सर्वोपरि है, वो भी दहल गए जो सेना से प्रेम करते है, वो आवाम भी दहल गई जो घाटी में रहती है, वो भी दहल गए जो देश के सुरक्षित होने का अभिमान करते है, वो भी दहल गए जिन्होंने ५६ इंची सीने की दहाड़ सुनी थी, वे सब दहल गए जिन्होंने राष्ट्र नहीं बिकने दूंगा,राष्ट्र नहीं झुकने दूंगा सुना था... वे सभी दहल गए जिनके दिल में राष्ट्र है... और कयास यही कि जिम्मेदार कौन ?

गुरुवार को श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग पर अवंतीपोर के पास गोरीपोरा में एक स्थानीय आत्मघाती आदिल अहमद उर्फ वकास ने कार बम से सीआरपीएफ के एक काफिले में शामिल बस को उड़ा दिया। हमले में 28 जवान शहीद हो गए, जबकि 36 जख्मी हो गए। विस्फोट में तीन अन्य वाहनों को भी क्षति पहुंची है। सभी घायल जवानों को उपचार के लिए बादामी बाग सैन्य छावनी स्थित सेना के 92 बेस अस्पताल में दाखिल कराया गया है। हमले की जिम्मेदारी तो आतंकी संगठन जैश ए मोहम्मद ने ले ली है। समाचार तो कह रहे है कि आत्मघाती आदिल अहमद उर्फ वकास-हमला जैश ए मोहम्मद द्वारा बनाए गए अफजल गुरु स्कवाड ने किया है। हमले से कुछ समय पहले का आदिल का वीडियो जो अफजल गुरु स्कवाड के मीडिया ने जारी किया है।

इसके बाद भी कहाँ गए वो जिम्मेदार जिनके कन्धों पर देश की सुरक्षा का जिम्मा है, कहा गए वो अजित डोभाल जो ये कहते कभी थकते नहीं की देश सुरक्षित हाथों में है। देश के सुरक्षा जवानों के शीश नहीं कटने देंगे या उनके प्राणों की आहुति नहीं होने दी जाएगी। आखिरकार पुलवामा हमले ने बता दिया की देश की अस्मत के साथ खेलने वाले यथावत जिन्दा है, नोटबंदी के बाद उन आतताइयों के पास नकली नोट ख़त्म होने से कमजोर हो गए आतंकी ये कहने वालों के मुँह पर करारा तमाचा है पुलवामा हमला।

कई सुहागनों का सिंदूर उजड़ गया, बहनों की राखी मौन हो गई उसके बाद भी देश के प्रधान अपनी चुप्पी पर मुग्ध है। यहाँ घाटी ने ललकार खोई है और वह लुटियन दिल्ली केवल वैश्विक दबाव का इंतजार करती हुई मौत पर तमाशे माना रही है।

देश में बजने वाले तानपुरे भी कवि हरिओम पंवार ने वीर रस की रचना कहने लगे है 'सेना को आदेश थमा दो, घाटी गैर नहीं होगी। जहाँ तिरंगा नहीं मिलेगा, उसकी खैर नहीं होगी।' और आज तो जिम्मेदारों की शांति वार्ताओं के चलते सेना ही असुरक्षित हो गई है। फिर कहे की राफेल खरीदी और कहे की हथियारों की खरीदी।

लुटियन दिल्ली की आदत में शुमार हो गया है जम्मू-कश्मीर मसले पर केवल शांति पैगाम भेजना, शांति दूत बन कर जाना, देश में ज्यादा बवाल हो जाए तो यूएन में जा कर बच्चों की तरह केवल चुगली करके आ जाना। क्योंकि यहाँ कोई ५६ इंची सीना है ही नहीं जो दम ख़म से आतंक के हर एक नापाक मनसूबों पर पानी फेर सकें, यहाँ तो हिंदी की कहावत 'थोथा चना बाजे घना' ही चरितार्थ है। केवल चुनावी बरसाती मेंढकों की तरह चुनाव आते है चिल्लाना शुरू कर देंगे, जुमले बाज़ी का दौर आ जायेगा, देश को झूठे वादे, झूठी कसमें दी जाएगी पर अन्तोगत्वा देश की सीमा और आतंरिक हालात असुरक्षित है। इसके जिम्मेदार कौन है यह तो सवाल नहीं क्योंकि जो जिम्मेदार है वो मौन है।

पुलवामा हमले में धमाके की आवाज से पूरा इलाका दहल गया और आसमान में काले धुएं के गुब्बार के साथ सड़क पर लोगों को रोने-चिल्लाने की आवाजें आने लगी थी। उन रुदन के बदले तुम तो इतना भी आदेश नहीं थमा पाए कि जम्मू और कश्मीर की तरफ निगाह उठाने वालों को दुनिया के नक़्शे से उठा दो। आखिर किस मज़बूरी के चलते अब तक केवल शांति के श्वेत कबूतर ही उड़ाए जा रहे है? क्यों घाटी में छिपे बंकर नहीं उड़ा दिए जाते? सियासत को लहू पिने की आदत तो है साथ-साथ मातम पर भी सियासत करके शांती का राब्ता कायम करने की भी आदत है। देश की सल्तनत को कठोर निर्णय लेकर राष्ट्र को सुरक्षित होने का एहसास दिलाना होगा वर्ना ये राष्ट्र भी रणबांकुरे पैदा करता है। वो शांति नहीं सुरक्षा चाहते है, वार्ता नहीं परिणाम मांगते है। समय को समझ कर राष्ट्र की अस्मत और सुरक्षा की व्यवस्था करना ही राजा का दायित्व है। न की खोखली बातो से देश को बरगलाना। याद रहें नायक तुम्हारी जबान में राष्ट्र की अखंडता और सुरक्षा महत्वपूर्ण होनी चाहिए।

डॉ अर्पण जैन 'अविचल'
पत्रकार एवं स्तंभकार

ख़ून की होली

(कविता/ कमलेश कमल)

वीर जवानों आज उठो
अब खेलनी ख़ून की होली है।
उठो, वीर रणभेरी बजी
बस, छुपी दुश्मनों की टोली है।।

यह पुलवामा या उरी नहीं
यह चूहों का हमला है।
भारत माँ के आँचल में
यह धब्बा ख़ून का गहरा है।।

बहता लहू जो उनकी रगों में
लहू नहीं है, पानी है।
दूध छट्ठी का बतला ना सके
तो जंगजू तेरी व्यर्थ जवानी है।।

पहले भी बंकर मारे तुमने।
दिखलाया है ताक़त को।
फौजी बूटों की ठोकर से
लतियाया है उनकी हिमाक़त को।।

48, 65 या फ़िर 71
जब भी लड़े तुम, जीते हो।
ढूंढो उन्हें हूरों से मिलाओ
कितना अब सहते हो??

धर्म-निरपेक्षता जात हमारी
भाई-चारा की भाषा है।
स्नेह, प्रेम, सद्भाव, मिले
यही लोकपिपासा है।।

पर, सच है कि सहने की
एक सीमा होती है।
इसके बाद ख़ुद ही
यह भीरुता बनाती है।।

सत्ता सुविधा दे न दे
यह देश तुम्हें दुआ देगा।
साहस पौरुष सब तेरा है।
इतिहास तुम्हें गौरव देगा।।

संपोलों को तुम पहले कुचलो
जो बिल-बिलाकर आते हैं।
हो सके तो उन्हें भी कुचलो
जो उन्हें बचाने आते हैं।।

यह दर्द बहुत गहरा है वीरों
यह और नहीं सहना है।
सवा अरब सिहों का प्रण है
अब और नहीं सहना है।।

'देश के दुश्मनों को आप भी पछाड़ सकते हैं!'

(आलेख-कमलेश कमल)

कई युवा मित्र मुझसे पूछते हैं कि वे सेना या पुलिस में नहीं हैं, पर देश की सेवा करना चाहते हैं, अपने वतन के काम आना चाहते हैं।

बात यह है कि देश सेवा के लिए वर्दी पहनना आवश्यक नहीं है। और, आज दुश्मन सिर्फ़ सरहद पर ही नहीं है। एक उदाहरण देखिए: आशुतोष मिश्र एक युवा लेखक हैं, देशप्रेम के जज़्बे से सराबोर। पुलवामा में CRPF के काफ़िले पर कायरतापूर्ण हमले के बाद जब पूरा देश उबल रहा है; इन्होंने अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर facebook पर ही तक़रीबन 250 देशद्रोही profiles को चिन्हित किया, report किया और तकनीकी ज्ञान से समाप्त भी कर दिया।

यह एक उदाहरण है कि जज़्बा हो तो हर कोई किसी-न-किसी तरह अपना योगदान दे सकता है।

यह एक विचारधारा की लड़ाई है, जिसे आप अपने स्तर पर लड़ सकते हैं। देश के अंदर छुपे दुश्मनों की पड़ताल कीजिए। जो भारत का खाकर पाकिस्तान का गाते हैं, या जिन्हें सेना नहीं बल्कि आतंकियों से हमदर्दी है, उन जयचंदों से ही ख़तरा ज़्यादा है।

अगर देश के अंदर के ये गद्दार ख़त्म हो जाएँगे, तो आपको क्या लगता है कि सरहद पार से आकर कोई हमारे यहाँ आतंकी घटना को अंजाम दे पाएगा? नहीं! कभी नहीं! सच यह है कि उनके हमदर्द यहाँ हैं, हमारे बीच ही हैं। आप उन्हें चिन्हित कर सकते हैं, expose कर सकते हैं।

यहाँ, यह ध्यान रखना होगा कि देश के अंदर किसी व्यक्ति की राजनीतिक विचारधारा हमसे अलग हो सकती है, बस देश हित सर्वोच्च रहे। हमारे विरोधी देश-प्रेमी हो सकते हैं, पर देश-विरोधी हमारे मित्र नहीं हो सकते। इसी तरह समाचार चैनलों के अपने target viewers हो सकते हैं, बस देश-हित से समझौता न हो। देश-प्रेम समर्पण माँगता है, उन्माद नहीं।

देश-प्रेम के कई आयाम हैं। आप जो कर सकते हैं, वह तो करें। आप देश-प्रेम की कविता लिख सकते हैं, लिखिए! आप चित्र बनाकर लोगों को सजग कर सकते हैं, कीजिए!

आप बुजुर्ग हैं, शिक्षक हैं या शिक्षित हैं, तो बच्चों में देशप्रेम की भावना भरिए! उन्हें सिखाइए कि वोट देश के लिए देना चाहिए न कि जाति, समुदाय या किसी लाभ के लिए।

आप स्वदेशी अपनाइए, स्वदेशी का प्रचार कीजिए! जापान या जर्मनी अगर विकसित देश हैं, तो वहाँ के बुजुर्गों, शिक्षकों, अभिभावकों के कारण जिन्होंने बच्चों में स्वदेशी और राष्ट्रप्रेम की भावना को कूट-कूट कर भर दिया।

सोचिए 20 वर्षों में जर्मनी दुबारा उठ खड़ा होता है, 30 वर्षों में जापान गौरवशाली हो जाता है...कुछ तो बात होगी। सेना ने नहीं, आम नागरिकों ने यह कारनामा कर दिखाया। भारत के आम नागरिक भी आज यही करने वाले हैं...ऐसा दिखाई देने लगा है।

मेरे एक मित्र ने अपने कोचिंग में शहीदों के बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराया है, तो एक चिकित्सक मित्र ने तख़्ती ही टांग रखी है कि अगर आप सेना के परिवार से हैं, तो कृपया फीस न दें!

हर कोई कुछ-न-कुछ कर सकता है। आप शहीदों के लिए दान दीजिए। आपके लिए सेना और सुरक्षा-बल के जवान अपना काम कर ही रहे हैं। आप क्या कर सकते हैं, यह आप ही तय कीजिए!

ये शहादत आखिर कब तक???

मोनिका अस्थाना

इज़रायल देश 13 दुश्मन देशों से घिरा है फिर भी किसी देश की हिम्मत नहीं जो उसपर बुरी नज़र उठा सके.. यहाँ तक कि ISIS जिसने पूरी दुनिया में आतंक बिछाया हुआ है..वो भी इजरायल के डर से कांपता है.. अगर हम किसी देश से सबक लेना सीख जाएं तो हमारे लिए ही अच्छा होगा.. मोदी जी ने इज़रायल से जो दोस्ती का हाथ बढाया है.. तो उसी देश से ही थोडी सीख ले ले, अपने सेना को इतना सक्षम बना दें कि कोई भी हमला करने से पहले दुश्मन सौ बार सोचें, हमारा तो बस एक दुश्मन है और वो भी आर्थिक रूप से लाचार. फिर भी वही देश सब संसाधनों से लैस होते हुए भी.. दुनिया के सबसे बड़े गणतंत्र को... हर बार आतंकी कार्यवाही से मात दे दे रहा... बेहद अफसोसनाक स्थिति...!

अल कायदा के हेड... ओसामा बिन लादेन को अमेरिकी सैनिकों ने पाकिस्तान में घुस कर मारा था क्योंकि अमेरिका ने 2001 में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए हमले में अपने कई नागरिकों को खोया था... और उसका दर्द इस कदर कदर हावी था कि 10 सालों तक वो लादेन को खोजता रहा और 2011 में बुरी मौत उसे मारा...ये होता है अपने देश और देशवासियों से प्यार.. जिसे हमें सीखने की बहुत जरूरत है...!

पुलवामा हमले का मास्टर माइंड मसूर अजहर,.. जिसे कश्मीर में 1994 को गिरफ्तार किया गया था, उसे 1999 में कंधार हाईजैक के समझौते में इसे सरकार को छोड़ना पड़ा... और यही हैवान आज हमारे देश के लिए नासूर बन गया है..
आज ये पाकिस्तान में बैठा है पर जब ये हमारे देश में था तो क्या कर पाए हम??

इस आतंकवादी को 5 सालों तक क्यों पालते रहे..क्या तथाकथित सरकार इसके आकाओं को खुश करती रही... उसे फांसी पर तुरंत क्यों नहीं चढाया गया??

अफजल कसाव मुम्बई हमले का आतंकी जो 2008 में पकड़ा गया और फांसी मिली 2011 में ..चार सालों तक हमने उसे देश का नमक खिलाया आखिर क्यों ..आतंकी को पालना जरूरी था क्या???

अगर देखे तो खामियां अपने देश में ही है ..इन आतंकवादियों के आका अपने ही देश में बैठे हैं जो वक्त वक्त पर इनकी सहायता करते हैं ..इन जैसे..गद्दारों को हम पालते हैं और इन्हीं के हाथों अपने जाबांज सैनिकों की खौफनाक शहादत देखते हैं ..
लेकिन कबतक???

ये मसला अपने देश का है ..हमने अपने वीरों को खोया है.. तो सुरक्षा भी खुद को ही करनी होगी.... और देशों से मदद की उम्मीद क्यों लगाना.???
हम भारतीय इतने सक्षम हैं और ...जरूरत है तो बस इतनी कि आज की सरकार को,... सियासत से ऊपर उठना होगा..केवल भाषण और बड़ी बड़ी बातें नहीं करके...इस बार करो या मरो का नारा सिद्ध करके दिखाना होगा...!!!!

काश..!
काश की तुम देख पाते..!

हेमन्त बोर्डिया

तुम देख पाते की तुम्हारी
अंतिम यात्रा के पीछे लोगों का
कितना हुजूम उमड़ा है..
काश तुम देख पाते जो
कल तक तुम्हारे नाम और
चेहरे से अनजान थे...
आज वहीं
बच्चे बच्चे की जुबान पर
तुम्हारा नाम है...
सिर्फ नाम नहीं ..
जयकारे हैं तुम्हारे नाम के..!
काश तुम देख पाते...
तुम्हारे परिवार से बात करने
उनका चेहरा देखने के लिए
बेसब्र है ..सारी मीडिया..!
काश तुम महसूस
कर पाते...कि तुम्हारा
चन्दन से पटा हुआ शरीर
खुशबू दे रहा है..मीलों तक..!
किसी जन्नत के फ़रिश्ते सा
नूर बरस रहा है
तिरंगे से लिपटे हुए
तुम्हारे ताबूत से...!
काश तुम देख पाते कि
तुम्हारे बहे खून की
एक एक बूंद
आक्रोश बन कर कई गुना
रफ़्तार से बहने लगी है ..
देश के जवानों के शरीर में..!
काश तुम देख पाते ..
तुम्हारी श्रद्धांजली सभाओं में
जलती असंख्य
मोमबत्तियों को,
जिन्हें कभी दुश्मन देश में
डाल दिया जाए तो वो
पल में भस्म हो जाए...
काश की तुम देख पाते
तुम्हारे जाने भर से
होने वाली क्रांति को..!

काश वो कायर ज़ेहादी भी
देख पाते..यह मंज़र
काश वो देख पाते
कि गैर पर
कब्ज़ा करने की नीयत से
मर कर मिली मौत
जिसमें बदन को खाक तक
नसीब नहीं होती..
और अपने वतन के लिए
मर मिटने वाली मौत में
कितना अंतर होता है ..!!

पूँजी सारी लुट गई

नफे सिंह योगी मालड़ा

समय पलट वापिस नहीं, आता मेरी बहन।
जैसे - तैसे भी करो, करना होगा सहन।।

पूँजी सारी लुट गई, बचा नहीं कुछ और।
सबसे प्यारी चीज को, चुरा ले गए चोर।।

पूछ रही भगवान से, बिटिया इक ही बात।
पाप पिता ने क्या किया,क्यों धोखे की घात?
सपने बिखरे देखकर,मारे बिटिया कीक।
बार - बार भगवान से,माँगे इक ही भीख।।

कभी तिरंगा देखकर,आया करता जोश।
वहीं तिरंगा देखकर, बिटिया है बेहोश।।

वीर सैनिक थे बड़े

-कीर्ती प्रदीप वर्मा

वीर सैनिक थे बड़े
मातृभूमि पर चढ़े,
घर में सभी के ऐसा
लाल होना चाहिये।

पीठ पीछे वार करें
धोखा देकर जो लड़े
प्रतिकार का अब तो
नाद होना चाहिये।

ये मेरा है अंतर्नाद
कैसा है यह जेहाद
गीदड़ नही इंसा को
फौलाद होना चाहिये।

धरा करे हाहाकार
नभ रोए जार जार,
वंदे मातरम का अब
निनाद होना चाहिये।

कैसा आया बसंत

वर्षा चौबे

ये बसन्त कैसा आया है
जिसमें सारे फूल झरे।
उजड़ा चमन वीराना घर
कैसे मनवा धीर धरे।

कोयल,भंवरों के स्वर में
करूणा गाती रोती है।
नम कलियों की पलकों से
सिसक- सिसक मकरंद गिरे।

खूनी आंचल कैसे सहती
पीड़ा लेकर पवन है बहती।
टेशू पलाश हुलस- हुलस
जग में है आक्रोश भरे।

लता वल्लरी मौन देखती
पुछा सिंदूर,कोख उजड़ती।
टूटे धागे राखी के
आंखों से आंसू निकल गिरे।

अबके बारिश में जो आओ तो ,
वो बरसाती भी संग लिए आना,
जिसे ओढ़कर भीगे थे ,
तुम्हारा दायाँ हाथ और,
मेरे बेतरतीब से बिखरे बाल .....

ब्रजेश शर्मा "विफल"

(काव्य खण्ड)

मेरे विचार अंतरा के लिए

किरण मोर कटनी म.प्र

अंतरा से मिला
मुझे नया आकाश
जहां मैं विचरती हूँ
नये पंखों के साथ।

मेरी लेखनी को
इतना विस्तार मिला है
पंख तो थे ही आज
उड़ानों का हौसला है।

दबे छिपे हुए थे और एक दिन
शायद यूं ही गुम हो जाते
पहचान मेरी प्रतिभा को
रोशनी दिखाई।

चल रही हूँ जहाँ पर इतने
मित्रों का साथ पाकर
वर्ना तो अकेले तन्हा पड़े थे
अंधेरे में एक दिन खुद ही तम हो
जाते।

कुंडलिया छंद

सीमा शिवहरे 'सुमन'

(1)
माँ को तज तीरथ चले,कभी सफल ना होय।
चारों धाम चरण बसे,माँ से बड़ा न कोय।
माँ से बड़ा न कोय,गोविंद शीष झुकावे ।
त्रिलोकी स्वामी भी, उ पे बलिहारी जाँवे।
ममता समझ सके न, करते फिरें तीरथ हज।
चले मूर्ख ऊवरन, अनाथालय माँ को तज।।

(2)
दीवानी है श्याम की, उर में जोत जलाय।
जो जोत खुद मोहन हो,उसको कौन बुझाय।
उसको कौन बुझाय, जो सुलग रही वर्षों से।
जनमों की प्रीत है, नहीं ये कल परसों से।
है आग का दरिया, प्यार से अंजानी है।
ना समझ नादाँ है, राधिका दीवानी है।

अदाएं

शीतल खण्डेलवाल

सुनो,,,
अच्छी लगती है
तेरी बातें
तुझ से मुलाकातें,,,
खिली धूप मलता
जवां हँसी चेहरा
गुलाब बिखेरती
लबों की मुस्कुराहट
और,
छुपा तिल का पहरा,,,
हाय,,,
जब भी मिलाती हो नज़र
निकल जाती है जान
तेरी जुल्फ़ों के झोंके
जब भी टकराते हैं
उफ़्फ़,,
मचल जाते हैं
सब अरमान,,,
हाँ,,,
चलाती है छुरी दिल पे
हाँ,,,
चलाती है छुरी दिल पे
तेरा काजल तेरी बिंदिया
लूट ले जाती है फ़िररर
मेरे आंखों की निंदिया,,,
और सुनो,,
ये तेरे कँगन की
खन खन
मचाये धड़कनों में
धम धम
और ये,,,तेरी पाज़ेब की
छन छन
करे दिल की लहरों पे
छम छम,,,
सच में,,,ना
सच में,,,ना,,,
तेरा संदली बदन
लहू में लोबान
जलाता है
और यूँ झटककर दुपट्टा
तेरा बेरुखीपन
पुरज़ोर चिढ़ाता है,,,
कसम से सनम,,
तमन्ना ए इश्क़ कि
तेरी आगोश में सो जाऊँ
मयस्सर न रहूँ
मैं खुद को
इस कदर खो जाऊँ
हाँ,,
इस कदर खो जाऊँ
इस कदर खो जाऊँ,,,

गीत / पूरन एक मिठास

सुनीता लुल्ला

आँखें जीवन जब भी खोले
पहली आती श्वास
आती जाती साँसें भरतीं
इसमें एक मिठास,,,,,,

कच्चे पक्के कदम धरा पर
बढ़ते जाते हैं
एक एक कर धीरे धीरे
मंजिल पाते हैं
कभी फूल मिलते राहों में
कभी बिछे हैं खार
एक चुभन फिर भर जाती है
दर्द भरा निःश्वास
सच पूछो तो तब भी मन में
पलती है इक आस
कभी आस है, कभी निराशा
अनुभव एक मिठास,,,,,,

जीवन की रुत बदला करती
दस्तक एक वसंत
रंग रूप की दुनिया खुलती
संभावना अनंत
अनजाने से सपने जगते
अनदेखी सी पीर
फूलों की खुशबू वाले तब
औचक लगते तीर
अंग अंग में मधुशाला के
खुलते सौ सौ द्वार
मादकता के, मधुरिम लय के
पल पल पारावार
कुछ दिन ठहर गुज़र जाता है
जीवन का मधुमास
थोड़ी पीर कसक दे कर भी
भरता एक मिठास,,,,,,,

अनुभव के पत्ते हो जाते
धीरे धीरे ज़र्द
यादों के आईने धुँधले
वक्त जमाता गर्द
अक्स कहीं पर खो जाते हैं
खाली सब हो जाता
धुँधलाई नजरों के आगे
सब कुछ है खो जाता
अंतस को है मगर पता ये
और सफ़र अब होगा
खाली हाथ जहाँ पहुँचेंगे
केवल वो रब होगा
शब्द कहीं गुम हो जायेंगे
अर्थ नये फिर होंगे
यही भाव फिर भर जाता है
कहीं एक विश्वास
हाँ ना की सीमा के आगे
पूरन एक मिठास,,,,,,,!

दोहे

कन्हैया साहू "अमित"

अपनी मिट्टी की महक, अपनेपन का भाव।
हिन्दी 'अंतर' में बसी, लेकर अमित लगाव।1।

हिन्दी मन की लेखनी, कहे हृदय हालात।
शुभवाणी शाश्वत सदा, सरल सहज सब बात।2।

हुए उपासक ये सभी, भक्ति किए भरपूर।
हिन्दी इनकी तूलिका, तुलसी मीरा सूर।3।

वंदन निज भाषा अमित, समझ इसे सरताज।
कोई कहता कुछ रहे, हिन्दी में हो काज।4।

अंग्रेजी के मोह में, निज भाषा मत छोड़।
पराधीन में सुख नहीं, राष्ट्रधर्म को जोड़।5।

हिन्दी भाषा है सबल, सबमें भरे उमंग।
यह भाषा ही राष्ट्र में, भरे एकता रंग।6।

'अमित' सुगम हिन्दी लगे, शब्द जाल ना क्लिष्ट।
भाषा जनहित मधुरिमा, वाणी वाक्य विशिष्ट।7।

हिन्दी भाषा भारती, फिर क्यों मन संकोच।
हिन्दी में सद्भावना, फिर भी इतनी सोच।8।

सरस भाव में शायरी, गीत गजल अरु छंद।
हिन्दी भाषा भाव को, समझे है मतिमंद।9।

क्रोध कषाय

राजेन्द्र 'अनेकांत'

रे
क्रोध
क्यों कर
सोचिये तो
हित अहित
वर्ना विघातक
हम सभी के लिए
विद्वान कहते
कभी किंचित
अधिक तो
हमेशा
बुरा
है,...!
रे
क्रोध
कषाय
मनुज को
मूर्ख करती
जब होश तब
पश्चाताप केवल
इसलिए कहा
क्षमाँ वीरस्य
भूषणम
सत्य है
सदा
से,...!
जे
ज्ञानी
उनका
पानी रेखा
समान क्रोध
क्षण मात्र बस
स्वपर हित हेतु
अज्ञानियों का तो
जन्मों रुलाए
जो हँसाए
वो बस
क्षमा
है,...!

गगनांगना छंद

जितेन्द्र चौहान "दिव्य"

हाथ जोड़कर खड़ा हुआ हूँ,
सुन माँ शारदे|
आ गया हूँ शरण तेरी माँ,
अब तो सार दे||

कुछ नहि दे माँ मगर एक है,
मेरी कामना|
कलम लिखे सदा सत्य चाहूँ,
ऐसी साधना||

उर में भरी है जो वासना,
कीजै दूर माँ|
हट जाये तम अहंकार को,
कर दे चूर माँ||

काट दो बंधन सभी आँचल,
में अब लीजिए|
है "दिव्य" की नित अरदास माँ,
उजास कीजिए||

तांका त्रिवेणी

कैलाश बिहारी सिंघल

•

वक्त की मांग
खत्म हो आरक्षण
देश का हित
प्रतिभा का सम्मान
युवा शक्ति महान||

•

पल की त्रुटि
सदी को मिला श्राप
बन्द हो अब
आरक्षण का पाप
समय का सन्ताप||

•

भारत ज्ञान
विश्व में सम्मानित
देश का युवा
स्वदेश में कुंठित
लम्हों की हार जीत||

पनप रहे हैं गद्दार आज अपने मुल्क़ में..
बेख़ौफ़ है सफेद पोश आज अपने मुल्क में..
बहुत हो चुकी अब बातें तहज़ीब तमीज़ की--
कर दो टुकड़े इनके आज अपने मुल्क़ में..!

आर के मरकम

गुस्सा

गणतन्त्र ओजस्वी

धारा प्रतिधारा बने,
भावों के अनुसार।
संवेगों के रूप में,
होवे वृद्धि अपार ।।

अपना वश खो जाय जब,
नयन लाल हों बन्द।
फड़कन ठिठुरन सी बढे,
शब्द बहें स्वच्छन्द ।।

वर्षा हो इसकाल में,
भाषा-समझ अकल्प।
मानव, मानव न रहे,
पशुता एक विकल्प ।।

गुस्सा मन का वेग है,
तुरत विलय हो जाय!
मन में भेद बढ़े यदि,
वैर यही बन जाय।।

गुस्सा क्षण में फुस्स हो,
पीवैं धीरज नीर।
क्रोधाग्नि भी शान्त हो,
मिटती अन्तस पीर।।

मैं हिंदी हिंदी हूँ

रजनी शर्मा

मैं भारत की बिंदी हूँ,हाँ मैं हिंदी हिंदी हूँ,
वैज्ञानिकता को ओडा है
बावन आखर जोड़ा है
फिर भी क्यों बेगानी हूँ
ज्यों कल की कहानी हूँ
11 स्वर धमाल कर जाते
33 व्यंजन कमाल कर जाते
चार संयुक्त का ठाठ निराला
अयोगवाह भी है देखने वाला
ङ और ढ़ आगत से आये इसमें
रस भी दस है छाए इसमें
पाणिनी से कर शुरुआत
साहित्य का बनी मैं ताज
कविताओं का सिन्दूर सजाती
दोहा रोला बरबै गाती
सोरठा छप्प चौपाई भी तो
खूब रंग जमाते हैं
शांत रस को ला कर वो
दस का समाज बनाते हैं
सधवा हूँ भाग्यशाली हूँ
देखो खूब बलशाली हूँ
मीठी और आनंदी हूँ
मैं भारत की बिंदी हूँ, हाँ मैं हिंदी हिंदी हूँ,.!

उजला दिन था ,तेरा साथ !
तुझसे बिछुड़ना ,, ये विरह रात !!
एक सुबह ,,कल फिर होगी !
क्या लौट आओगे ? फिर मेरे पास ! [देव वत्स]

राष्ट्रभाषा हिन्दी

बबिता चौबे शक्ति

माथे बिंदी लगी है प्यारी - हिंदी हिंदुस्तान की ।
भारत माँ की राज दुलारी - हिंदी हिंदुस्तान की ।।

संस्कृत की बेटी लाड़ली हिंदी हिंदोस्ताँन की
भोजपुरी बुंदेली बोली मनभावन से अभिमान की

कहि गीत बन सरगम बनती कहि राग लय् तानकी
कहि गजल व शेर बनती हिंदी हिन्दोस्तान की

लोरी बन ममता छलकाती राष्ट्रगीत सम्मान की
कहि वीर रस कविता रचती आल्हा धुन रसखान की

कहि पे दोहा छंद रोला बन चोपाई रचती राम की
कहि सूर घनश्याम की महिमा लिखते महिमा धाम की

कहि चालीसा बेद रचाय महिमा हिंदुस्तान की
हिन्द हिंदी की महिमा प्यारी प्रीत गीत गुणगान की

हिंदी रस रंग रूप वतन की हिंदी हिन्दोस्तान की
माथे बिंदी लगी हो... प्यारी हिंदी हिंदुस्तान की

माथे बिंदी लगी है प्यार - हिंदी हिंदुस्तान की ।
भारत माँ की राज दुलारी-हिंदी हिंदुस्तान की।

खिड़की

पिंकी परुथी "अनामिका"

हाँ,
अपने घर की,
खिड़की से।
रेलगाड़ी का आना-जाना,
छुक छुक करना,
हार्न बजाना।
कभी समय पर,
कभी देरी से,
लेकिन निश्चित है उसका आना।
कभी पहले, उसकी आवाज,
बहुत ही तीखी लगती थी।
बार बार का शोर सुनकर,
मैं भी गुस्सा करती थी।
इतने सालों में अन्तर ये आया,
उसका आना बढ़ता गया।
धीरे धीरे, उसकी आवाज ने,
तंग करना मुझको छोड़ दिया।
या, इसको यूँ कह सकते हो,
मैंने जीना सीख लिया ।
अब मैंने ये मान लिया,
ना बदलेगी कोई स्थिति तो,
खुद को ही बदलना होगा।
भाए या ना भाए हमको,
हर हाल में ही जीना होगा।
जो हम देंगे अधिक ध्यान तो,
वो ही हमें परेशान करे।
जो ना दें हम ध्यान तो
कुछ नहीं कर पाए वो,
मन को स्थिर बनाएँ,
जीवन के रस ले पाएं।
वरना कब तक,
गिरते पड़ते,
इस जीवन को ढोते जाएँ।
थोड़ी कोशिश करनी होगी,
लाचारी भी हरनी होगी ।
ध्यान यदि करें संकल्पों पर,
तो आवाज़ें ना सुनाई देंगी,
सुनाई भी यदि पड़ जाएं तो,
कोई असर ना कर पिएंगी।

न तन तेरा न तन मेरा

रचना सक्सेना, इलाहाबाद

इसे जीवन की साँझ ही समझो,
यदि तन उजला और मन मैला।
मिट्टी का जो एक पुतला केवल,
वहाँ उजले मन से बस नवबेला।
न तन तेरा न तन मेरा।।

मन से केवल मिलन है मन का,
और मन से ही बस प्रीत यहाँ।
मन से ही बस सब रिश्ते नाते,
न मिले यह मन तो जीत कहाँ।
न तन तेरा न तन मेरा।।

मन तो है एक उजला सा दर्पण,
दिखती सूरत एक छवि वहाँ।
सिमटकर मन के भाव समर्पण,
गंगा नयन से उतरती जहाँ।
न तन तेरा न तन मेरा।।

मिट्टी के इस नश्वर जग में,
मिट्टी का बस घट तेरा।
कर्मो का जल भर-भर करके,
कर्मो का बस जग मेला।
न तन तेरा न तन मेरा।।

भर लो उजले मन से घट को,
पावन जल मन का संगम।
एक दिन टूट ही जाना घट को,
डर टूटने का क्या करना गम।
न तन तेरा न तन मेरा।।

क्रोध से तन का घट तपता है,
क्रोध से मन का जल जलता।
दोनो के जल जलती अग्नि से
आत्म का स्वरुप बदलता।
न तन तेरा न तन मेरा।।

ॐ श्री सूर्य देवाय नमः

रेखा ताम्रकार 'राज'

सूरज बैठा समय के रथ पे रहा घोड़े दौड़ाये
शीघ्र धरा में पहुँचने को मन बड़ा अकुलाये

सरपट-सरपट भागे घोड़े
चहुँ ओर किरण बिखेरते
पेड़-पौधे फूल-पत्तियों में
जैसे प्राण जल वो सींचते
बीच राह कोहरे की चादर तनी देख घबराये
शीघ्र धरा में पहुँचने को मन बड़ा अकुलाये

गति जरा भी न कम होती
पल प्रति पल बढ़ती जाती
संग-संग चलें जो रश्मियाँ
उठो चलो बढ़ो कहती जाती
चल व अचल संपदा को रौशन करती जाये
शीघ्र धरा में पहुँचने को मन बड़ा अकुलाये

सूरज है तो जीवन यह है
सूरज है तो है दिन व रात
सूरज से ही है सारा जगत
सूरज से मिली हर सौगात
जानता है वो तभी हर दिन धरती पर आये
शीघ्र धरा में पहुँचने को मन बड़ा अकुलाये

"आह !कोख़ रोती हैं कहीं सिन्दूर भी रोने लगा,
माँ भी रोती हैं और बाप ज़ार-ज़ार होने लगा,
कफ़न बनकर इस तिरंगें का रंग लाल हो गया,
आंसू रो-रो कर कहीं सूखी आँख में सोने लगा।

- राजेश मेहरोत्रा "राज़"

एक नया चित्र बना,,,,

जयकृष्ण चांड़क 'जय'

सूरज की रश्मियां ले,
बादल से बिजलियां ले,
विरह की सिसकियां ले,
यादों से हिचकियां ले,
कोई तो यहां मित्र बना,,एक नया चित्र बना,,,,

राग से, अनुराग से,
पानी और आग से,
फूल से, पराग से,
ज़िंदगी के भाग से,
योग ये विचित्र बना,,एक नया चित्र बना,,,,

हुस्न और शबाब का,
शब्द और किताब का,
तारों, आफताब का,
कांटों का गुलाब का,
महकता सा इत्र बना,,एक नया चित्र बना,,,,

उम्मीदों भरी रात से,
ज़िंदगी की बात से,
धर्म सें ना जात से,
खुशी की सौगात से,
संयोग ये पवित्र बना,,एक नया चित्र बना,,,,!

याद कर लेना

अंकित शुक्ला, खरगोन

नही मालूम ये मुझको कितना
बाकी रहूँगा मैं..
पर जो कुछ बच जाऊं अगर थोड़ा
तो उतना याद कर लेना...

जो किस्सो की गली से चुन ने
जाओ कोई किस्सा तुम..
वहाँ से आते आते मेरा एक किस्सा
साथ कर लेना...
जो तन्हा रात हो कोई,जो दिल की
बात हो कोई,
जो गम कुछ बाटना चाहो तो आगे
हाथ कर लेना.....
मेरी बातें मेरे नग़मे मेरी आवाज
की ख्वाहिश,
दिल कभी कर जो बैठे तो कभी
तुम याद कर लेना..
मैं जो बच जाऊं अगर थोड़ा तो
उतना याद कर लेना...

मेरे ख्वाबो की आदत है यूँ अक्सर
टूट जाने की...
यही कहना कभी खुदसे ओर मेरी
बात कर लेना..
मुझे टूटे हुए अरसा हुआ,मैं एक
दौर हूँ हारा..
मेरे हालात को, अंदाज़ को बस
याद कर लेना..
कभी जो हिचकियां आये,और
अपने साथ हो सारे..
तब तेरे लब पे मेरे नाम को आबाद
कर लेना..
अपने साथ कि बाते लिखी है फिर
कही शायद,
यही कहना तू फिर खुद से,और
मुझको याद कर लेना..
तेरे हाथो में फिर महसूस मेरा हाथ
कर लेना...
मैं जो बच जाऊं अगर थोड़ा तो
उतना याद कर लेना..

संघर्ष

अंजली वैद

मन का मन से भावों से
चलता हमेशा संघर्ष
जो मिला और जो नहीं मिला
उसे पाने का संघर्ष
जो है उससे ज़्यादा पाने का संघर्ष
कभी भूत के लिए संघर्ष
कभी वर्तमान व आने वाले भविष्य
के लिए संघर्ष
आदर्शों पर खरा उतरने के लिए
संघर्ष
सबका मन जीतने का संघर्ष
अनकही बातों को कहने का संघर्ष
जीवन के हर मोड़ पर है संघर्ष
जीवन का नाम ही है संघर्ष
पर
हमें यह स्वीकार करना है सहर्ष।

खून

आभा दवे मुम्बई

खून से सींचा है शहीदों ने भारत के
इस देश को
लहू अब ना और बहे और न
तलवारें चले
रहे हिलमिल सभी यहां देश का
गुणगान करें
बुरी नजर ना लगे किसी की
इसका भी हरदम भान रहे
एकता में है शक्ति एकजुट हमारा
नारा है
भारतवर्ष का तिरंगा हमको जान
से भी प्यारा है
देश की खातिर यहाँ पर हर
सैनिक तैयार है
अपनी माटी पर न्यौछावर करता
अपनी जान है
शहीदों की शहादत सदा अमर रहे
रखना हम को हरदम इसका
ध्यान हैं
इस पावन धरा का करना सम्मान
है
वीरों की इस भूमि को शत्-शत्
प्रणाम है।

यदि आप हमेशा,
गुस्सा या शिकायत करते हैं,
तो लोगो के पास,
आपके लिए समय नहीं रहेगा,,,,,,

सुनील दास "अकेला"

इस मिटटी पर

हेमंत दुबे,रायगढ़ (छ.ग.)

मेरा भारत मेरी मिटटी, यही हमारी धरती माँ
वतन की मिटटी ही माँगू, न चाहु जहाँ न आसमाँ।
इसकी मिटटी इसकी खुशबु, जन्नत भी बेकार है
हम सब भारतवासी इस पर, मरने को तैयार हैं॥

इसकी रक्षा की जिम्मे, हम सब भारतवासी पर है
रक्षा भी ये हमारी करती, सब हिन्दुस्तानी का घर है।
गोली चले या बरसे तीर, हो जाए सीने के पार
एक बार नहीं 'इस मिटटी पर' मिट सकते हम बार बार॥

अटल पर्वतें मातृभूमि की, उत्तर में कर रही है रक्षा
देशद्रोहियों की निति से, चीख उठे अब बच्चा बच्चा।
उन द्रोही हवाओं से, लड़ेंगे हम बनके तूफ़ान
हम तूफानों से टकराये, उसका नहीं है ये जहान॥

नई सुबह में देखो तुम, इंद्रधनुष सतरंगी को
सबसे ऊँचा करेंगे जग में, हम अपने तिरंगी को।
झुकने न देंगे झंडे को, यही हमारी शान हैं
एक नहीं इसपर अब तो, जनम जनम क़ुर्बान है॥

हिन्दुस्तानी के सीने की, ज्वाला को कौन रोक सका
आग भरी नज़रों के डर में, खुद को कौन है झोंक सका।
अब तो वो भी जान गए की, हाथ में उनके हार है
देश के लिए हम उनको लेकर, जलने को तैयार हैं॥

कितने आये चले गए, लम्बी कितनी क़तार है
पर उन सब एक एक के पीछे, हम भी खड़े हज़ार हैं।
नौजवानों की बहादुरी, मुँह पर उनके मार है
हम आज़ादी को आबादी, करने को तैयार हैं॥

मातृभूमि से किये हुए, वचन सभी निभाना है
इसके खातिर जीते हुए, इस पर ही मिट जाना है।
बेईमानी को काटेगी अब, अच्छाई का तीर
सत्य ही विजय पायेगी सत्य की होगी जीत॥

गूंजे सारे आसमान में, एक ही स्वर एक ही राग
हम सब इस धरती पर आये, कितने बड़े हमारे भाग।
एक राग और एक लय, भरने को तैयार हैं
हम सब भारत माता की जय, करने को तैयार हैं॥
हम सब भारतवासी इस पर मरने को तैयार हैं.....

झूठ फरेब का जाल

कैलाश मंडलोई कदंब

नेता जी ने फिर हुंकारा।
झूठे वादों से ललकारा।।
गली गांव में गूंजा नारा।
होगा अब उद्धार तुम्हारा।।

करने लगे अजब कमाल।
झूठ फरेब बिछाया जाल।।
बॉटल नोट से मांगे ओट।
पहन के कुर्ता टाई कोट।।

अबके मुझको देना ओट
फिर से तुमको दूँगा चोट।।
खाली करूंगा सारी जेब।
ले लूंगा मैं कंगन पाजेब।।

चमचे चम्मच लेकर आए।
नेता जी को फूल चढ़ाए।।
कुछ चमचों ने माथा टेका।
कुछ ने रंग गुलाल फेंका।।

पर जनता ने अब के ठाना।
नेता जी को भी पहचाना।।
मन ही मन में बांधी गांठ।
कर दिये सारे बल्ब सांठ।

आग

हरि प्रकाश गुप्ता, भिलाई

कैसे लगी ये आग
किसने लगाई ये आग
ये जान रहा समाज
पर क्या कर सकता है आज
घर जलाया किसी का
भला करवाया किसी का
घर जलवाने बाले ने
बुरा किया तुझी का
तू देख न सका
नाजारा रात में
क्यों कि तुम डूबे हुए थे
मिलने बाले पैसे के ख्याल में
आता था जलाने किसी का घर
लेकिन तू तो हो गया खुद वेघर
क्या उन पैसों से होगा तेरा सफर
सोच कर बता ऐ मेरे हमसफर
घर के साथ और क्या जला
तू क्यों जानेगा भला
आया था अकेला
बनकर शैतान का चैला
तू तो जान भी न सका
लगी हुई आग ने तुझे कहां धकेला
घर में तेरे क्या सामान था
जो उन्हें जलवाना था
तेरे परिवार को जलाकर ही उन्हें
अपनी पयास बुझाना था
पर तुम क्यों सोचोगे इतना
तुम तो देख रहे थे पैसों का सपना
जलाये हैं पराये पर क्या मालुम था
कि
जल गये सभी अपने
पूरा कर सब अपना काम लेकर
ईनाम
जब तुम बापिस आये अपना घर
ढूंढ न पाये कि हम कहां आये
तुम आगे दिये चल पीछे हुई कुछ
हलचल
खड़ा था एक पागल और बोला
इससे क्या मिला तुम्हें हल
तुम देख रहे थे सपने
खुद की लगाईं आग में तुमने
जला दिए अपने
यदि अब भी बाकी है कुछ शरम
तो मत करो ऐसा करम
न लगाना अब कभी आग
इससे जल जाते हैं फूले फले बाग
उन बागियों को है जलाना
जो कर रहे हैं मनमाना
कुछ तो कर ऐसा काम
जिससे लोगों को हो तुम पर
अभिमान
सुबह कि भूला शाम को घर आया
भटका हुआ राही ठोकरें खाकर
ही अपनों का मन जीत पाया

हाइकु

धधक रही
प्रतिशोध की ज्वाला
हर जन में

खोये है मोती
हरित चमन ने
बेबस हस्त

न्यौछावर है
हर खूँ-ए-कतरा
देश के लिए

सुधा भारद्वाज"निराकृति"

अद्भुत दृश्य

सीता गुप्ता दुर्ग छ. ग.

चलती है "शीत" लहर सुबह -सुबह जब.....
तब कई बार हम एक इंच कंबल से बाहर नहीं निकलते।
पर... इतने ही समय उसी "शीत लहर "में,
कुछ लोग काम पर जाते नजर आते हैं।
जा रहा है कोई ईमानदारी से घर-घर दूध के पैकेट पहुँचाने,
ताकि.. उसके बच्चे को भी दूध मिल सके।
तो कोई.. बाँटता है घर-घर पेपर,
ताकि.. आने वाली पीढ़ी,
उसके घर भी शिक्षित हो, आगे बढ़ सके।
तो.. कुछ चुपचाप चलते -बढ़ते,
काम की तलाश में नजर आते हैं।
निकल पड़ता है सब्जी वाला,
ठेले को लेकर कॉलोनी की तरफ,
ताकि.. घर -घर टिफिन समय से बन सके।
और.... उसकी हरी -हरी सब्जियों के,
सही दाम उसे भी मिल सके।
ऐसे ही न जाने कितने दृश्य...
दिखाई पड़ते हैं कोहरे से भरी सर्द सड़कों पर,
जो.... "शीत -सर्दी -ठंड "को जैसे,
गरमाहट के लिए मजबूर करते हैं।
और फिर मानो..... वह!
अपने कर्म अपनी मेहनत को,
स्वयं प्रणाम करते नजर आते हैं।

बाल कविता खण्ड

नवछंद में नवगीत

पूनम (कतरियार)

तिमिर का तम भेद कर,
कोहरे का धुंध भेद कर,
उषा की अंगुली थामकर,
धूप की पोटली बांधकर,
मुसकाते आयें,सूरज दादा..

प्रचंड शीत भी थी कांपती,
प्रचंड अग्नि भी थी हांफती.
खगो के पंख को सहलाते,
विटप-वल्लरियों को दुलराते,
मुसकाते आयें सूरज दादा..

जन-मन में उन्मेष हुआ,
स्फूर्ति का समावेश हुआ.
नवछंद में नवगीत ढालकर,
नवगति से जग में प्राण भर,
मुसकाते आयें सूरज दादा..

भोर की पहली किरन से, अब भो गये हो तुम।
ओस में भींगे सपन से, अब छा गए हो तुम।
मोरपंखी छुवन बन कर, प्यास अधरों पर धरे,
प्रेम की रसधार में, आचमन से आ गये हो तुम।
राजू उपाध्याय

सूरज दादा

अर्चना कटारे शहडोल (म.प्र)

सूरज दादा सूरज दादा
सुवह जल्दी से क्यों आते हो
शाम ढले क्यों छुप जाते हो
रात को हमको जब ठँड लगती

आप कहाँ चले जाते हो
सुवह सबेरे स्कूल जाता
तब भी ठँडी देते हो
रेल के इँजन जेसी भाप निकलती

दाँत भी किटकिट करते हैं
मम्मी भी सुबह से नहलाती
तब कहाँ लुक जाते हो
गर्मी मे हम कहते रहते

कम तपो,कम तपो
तब खूब अँगारे बरसाते हो
जब रहती आपकी जरूरत
पता नहीं कहाँ छुप जाते हो

अनगिनत प्रश्नों की गठरी

नवीन जैन अकेला

शीत काल के
अनगिनत प्रश्नों की
गठरी सर पर रखकर
सूर्य देव प्रस्थान कर गये
उत्तर की खोज में
निश्चित है मिलना
हर प्रश्न का उत्तर
प्राप्त उत्तर ही निश्चित करेंगे
सूर्यदेव का व्यवहार
कुछ उत्तर होगें
सकारात्मक तो
शीतल होगी किरणें
बिखेरेंगे सूर्य देव
स्नेह की गुनगुनी धूप
जो प्रदान करेगी धरा को
शीतलता से मुक्ति
कुछ नकारात्मक
उत्तर
कर देंगे सूर्य देव को रुष्ट
क्रोधित सूर्य देव
बर्षायेंगे अग्नि बाण
व्याप्त हो जायेगी
अकुलाहट
तब व्यथित धरा की
वेदना हरने
प्रकट होगें इन्द्र देव
सृष्टि चक्र चलायमान है
प्रश्न और उत्तर की धूरी पर,..!

प्रेरक विचार

निर्माण

एक व्यक्ति चाँदी के एक टुकड़े को बार-बार आग में डालता, उसे निकालता, उसे देखता और फिर से आग में डाल देता।

मैंने उनसे पूछा- ये आप क्या कर रहे हैं ?

वे बोले- मैं चाँदी के इस टुकड़े को शुद्ध कर रहा हूँ।

मैंने उनसे पूछा- आपको कैसे पता चलेगा कि ये शुद्ध हो गया है ??

वे बोले- जब इस टुकड़े में मुझे अपनी सूरत दिखाई देने लगेगी मैं समझ जाऊँगा की अब ये पूर्ण शुद्ध हो गया।

तो जब भी हमारे जीवन में कठिन परिस्थितियाँ आएँ, हमें लगे की हम इतनी मुसीबत में क्यों हैं ? तब समझ जाइए की हम ईश्वर के हाथ में हैं.. वो कभी जलाकर तो कभी मिटाकर हमारा निर्माण कर अपने योग्य बना रहे होते हैं। ध्यान रखिए ईश्वर या परमात्मा उन लोगों को ही आग में तपाता है जिनमें उसको अपनी सूरत देखनी होती है।

आशुतोष राणा

जरा सी बेफिक्र हो जिंदगी

शिखर चंद जैन
(मोटिवेशनल राइटर)

बुरे वक्त में भी जिंदगी मुस्कुराती है
अगर आपको ज़रा सी बेफिक्री आती है

इन पंक्तियों को अगर आप सदा याद रखें और इन्हें आत्मसात कर सकें तो आप काफी हद तक अपनी उदासियों और दुखों से खुद को दूर रख सकते है।

दूसरों की नहीं,खुद की फ़िक्र करें- जब हम हमेशा खुद को छोड़कर दुनिया की फ़िक्र ज्यादा करने लगते हैं तभी जिंदगी बोझिल,उबाऊ और तनावग्रस्त हो जाती है. हम चाहकर भी अपने प्रति लोगों की धारणा को कमी नहीं बदल सकते इसलिए सुकून से अपनी जिंदगी जिएं और खुश रहें। **चीनी विद्वान लाओ त्सू ने कहा है, 'इस बात की परवाह करेंगे कि दूसरे लोग क्या सोचते हैं तो आप हमेशा उनके कैदी रहेंगे।'** इसलिए जिंदगी को सही तरीके से जीना है तो चार लोगों की फिक्र छोड़े और बेलौस जिंदगी जिएं।

खुद को खुश रखने का लीजिए फैसला- बस अभी फैसला कर लें कि आपको स्वयं को खुश रखना है.एक मिनट में जिंदगी नहीं बदलती पर एक मिनट सोचकर लिया हुआ फैसला पूरी जिंदगी बदल देता है। दुनिया में हर तरह के लोग हैं.कुछ लोग आपकी प्रशंसा करेंगे और कुछ आपकी आलोचना करेंगे। समझ लीजिए कि दोनों ही आपके लिए फायदेमंद हैं। **प्रशंसा करने वाले प्रेरणा देते हैं और आलोचना करने वाले गलतियां सुधारने का मौका। लेकिन आपको इसका बोझ अपने सिर पर नहीं ढोना है।'**

बंद कीजिये खुद को कोसना- जिंदगी उनके लिए सबसे अच्छी होती है, जो इसे एंजॉय करते हैं, उनके लिए कठिन होती है जो दूसरों से तुलना करते हैं और उनके लिए सबसे मुश्किल जो इसकी आलोचना करते हैं। आपकी जिंदगी कैसी है, यह आपका नजरिया तय करता है।इसलिए अगर आप सुकून की जिंदगी चाहते हैं तो खुद को कोसना बंद कीजिये। **अपनी अच्छाइयों के लिए खुद को सराहें और कमियों को सुधारें. आज के जमाने में आप खुद अपनी पीठ नहीं ठोकेंगे तो दूसरा कोई आपके लिए ताली नहीं बजाएगा।**

जियें अपनी बेहतरी के लिए– जिंदगी बहुत खूबसूरत है। एक दिन, एक घंटा और एक पल आपकी जिंदगी में दोबारा नहीं आएगा। इसलिए लड़ाई झगड़ा, नफरत और ईर्ष्या छोड़े और खुद को कोसना या दूसरों से कमतर आंकना बंद करें और इसके एक एक पल को अपनी बेहतरी के लिए इस्तेमाल करें. आप अपने इस निर्णय का सम्मान करने लगेंगे, तो दूसरे खुद व खुद आपके मुरीद होने लगेंगे।

मुखर विरोध जरुरी नहीं- कई बार चुप रहना बुजदिली नहीं बल्कि समझदारी और वक्त का तकाजा होता है।इसलिए किसी पार्टी में, सामूहिक समारोह में या मीटिंग में अगर कोई प्रभावशाली व्यक्ति आपकी आलोचना करता है तो उस समय कोई प्रतिक्रिया न दें क्योंकि वहाँ उसके प्रभाव में लोग सच का नहीं सिर्फ उसका साथ देंगे.इससे आपका आत्मविश्वास कमजोर होगा क्योंकि तब आपको लगेगा कि इतने लोग आपकी बुराई कर रहे हैं तो आप ही गलत हैं।

अफ़सोस न रहे दूसरों को खुश रखने का- ऑस्ट्रेलिया की नर्स ब्रॉनी वेयरने अपनी पुस्तक **'द टॉप फाइव रिग्रेट्स ऑफ द डाइंग'** में बताया है कि मरने वाले लोगों को सबसे बड़ा अफसोस यह रहा कि उन्होंने अपनी मर्जी का जीवन न जीकर दूसरों को खुश करने के लिए जीवन जिया। **जर्नल ऑफ सोशल एंड क्लीनिकल साइकोलॉजी** में प्रकाशित शोध में भी इस बात की पुष्टि की गई है कि लोग दूसरों के सामने श्रेष्ठ दिखने की कोशिश में ज्यादा व्यस्त रहते हैं।

ये संकेत है आपके दूसरों से प्रभावित रहने के

- दूसरों की नाखुशी का जिम्मेदार खुद को मानते हैं और किसी के नाराज होने पर आप असहज हो जाते हैं।
- किसी की राय में सहमत न होने के बावजूद आप उसकी नाराजगी के डर से हां में हां मिलाते हैं।
- इच्छा न होने के बावजूद आप दूसरों के द्वारा बताए काम कर देते हैं।
- दूसरों को खुश करने के चक्कर में बहुत सारा समय बर्बाद कर देते हैं जिससे आपका आर्थिक नुक्सान होता है।
- जब तक कोई आपके काम की सराहना नहीं करता या आपसे उसका जिक्र नहीं करता तब तक आपको संतुष्टि नहीं होती।
- आपके मन में हमेशा डर रहता है कि कोई आपको स्वार्थी न समझ ले।

फ़िक्र छोड़ देंगे तो ये फायदे होंगे

- आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा।
- आपके पास अपने असली लक्ष्यों के लिए ज्यादा समय और ऊर्जा होगी।
- आप कम तनावग्रस्त रहेंगे।
- ज्यादा स्वस्थ रहेंगे।
- लोगों से रिलेशन इम्प्रूव होंगे।
- आपकी विलपॉवर बढ़ेगी।
- **गुलजार ने कहा है-**

उम्र जाया कर दी लोगों ने औरों के वजूद में,
नुक्स निकालते निकालते।
इतना खुद को तराशा होता,
तो फरिश्ते बन जाते।

कथा-कहानी खण्ड

बदलता जमाना

ए.के. सिन्हा

यों तो मि. मेहरा अपने हाथों की उँगलियों पर नेल पौलिश लगा रही थी। लेकिन उनका दिमाग कहीं और था। इसका कारण यह था, कि मिसेज मेहरा के पति मिस्टर आलोक मेहरा की चाची श्रीमती कौशल्या देवी "कुंभ" मेले में स्नान करने के लिये इलाहाबाद आ रहीं थी और उनका पूरे बीस दिनों तक इलाहाबाद में रहने का कार्यक्रम था। दरअसल मिस्टर आलोक मेहरा की माताजी का देहांत बचपन में ही हो गया था, इसलिए सास के रूप में मिसेज मेहरा ने उन्ही का जाना तय किया था। इसलिये मि. मेहरा कौशल्या देवी से काफी भय खाती थी और सम्मान तो करना ही था।

"अब तुम भी तैयार हो जाओ" मिस्टर आलोक मेहरा ने कमरे से बाहर निकलकर कोट पहनते हुए "ट्रेन आने में अब दो घण्टे की ही देर है। कुछ नाश्ता बना लो मै लौटते फल और मिठाईयाँ लेता आऊँगा। लेकिन कुछ नाश्ता तो बना ही लेना। उन्हे बाहर का खाना ज्यादा पसंद नही है।"

"यही सब तो परेशानी है" खीजकर मिसेज मेहरा ने अपने नाखूनों पर इतनी मेहनत से लगाये लेन पोलिश को मिटाते हुए कहा "वो कुक का बनाया खाना तो खायेंगी नही। मुझे ही बीस दिनों तक खाना बनाना पड़ेगा। जमाना इतना बदल गया है और आगे बढ़ गया है, लेकिन वे अभी भी पुरातन पंथी विचारों से चिपकी हुई है। कुक के हाथों का बनाया खाना मत खाओ। होटल से खाना मत मंगाओं"

"नीरा बीस दिनों की ही तो बात है। किसी तरह निकालो" मिस्टर मेहरा ने अपनी पत्नि की बात काटते और नाश्ते की टेबुल पर बैठते हुए कहा! "तुम्हें तो मालूम ही है कि माँ के देहांत के बाद उन्ही लोगो ने हमलोगो की देखभाल की और पालन पोषण किया।"

नीरा ने आलोक की बातों का कोई उत्तर नहीं दिया और कपड़े उठाकर नहाने के लिये बाथरूम की ओर बढ़ गई।

श्रीमति कौशल्या देवी प्रायः साठ वर्ष की सम्रांत महिला थी। वे आलोक मेहरा के पिता के छोटे भाई की पत्नि थी। वे एक संपन्न बिजनेस घराने से आई थी, जबकि आलोक के पिताजी सरकारी नौकरी में थे और उनके घर के ज्यादातर लोग भी नौकरी पेशा ही थे। प्रायः पंद्रह वर्ष पूर्व एक कार दुर्घटना में वे बुरी तरह घायल हो गई थी, और प्रायः दो वर्षो तक वे बेड रेस्ट में रही और उनकी दुनियाँ उनके कमरे तक ही सीमित हो गई। लेकिन उनके पति ने बहुत प्रयत्न किया उन्हे इस अवसाद की दुनियाँ से बाहर निकालने के लिये उनके मन से भी धीरे-धीरे अवसाद का अंधेरा छटने लगा और वे कुछ सामाजिक कार्यो में भाग लेने लगी। उनके इस दृढ़ निश्चय ने उन्हें इस क्षेत्र में भी काफी आगे बढ़ाया और उन्होनें कुछ अन्य औरतों की सहायता से एक "सिलाई सेंटर" खोल लिया जिसमें औरतों और बच्चों के कपड़े सिले जाते और रेडीमेड की दुकानों पर विक्रय के लिये भेज दिये जाते। बिजनेस घराने से होने के कारण उनमें बिजनेस की सूझबूझ तो थी ही और परिजनों से भी उन्हे काफी सहयोग मिला। वह महिला सशक्तीकरण और महिला सक्ष्मीकरण की समर्थक थी। इसके चलते उन्हें काफी सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई और 'मेरठ' मे उन्हें काफी सम्मान से देखा जाता था। उन्हें धार्मिक कार्यो में काफी रूचि थी। इसलिये वे इस वर्ष लगने वाले 'कुंभ' मेले में 'कुंभ' स्नान के लिये 'मेरठ' से इलाहाबाद आ रही थी।

यही नीरा की परेशानी की वजह थी। उन्हें यह बीस दिन किसी जेल-यात्रा से कम नजर नहीं आ रहा था। क्योंकि वे अपना और अपने पति का खाना खुद बनाती थी। होटलों में जाना या वहाँ से खाना मंगाना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था। उनके दोनों लड़के अमेरिका में 'कम्प्यूटर' इंजीनियर थे और वहीं बस गये थे। कौशल्या देवी को काफी साहित्यक रूचि भी थी। इसलिये कौशल्या देवी ने इलाहाबाद में "कुंभ" स्नान के बाद कुछ साहित्यकारों से मिलने और साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेने का कार्यक्रम बना लिया। इलाहाबाद तो साहित्य और साहित्यकारो का शहर है, इसलिये यहाँ बीस दिन गुजारने की समस्या नहीं थी। कुछ कामों में फंसे रहने के कारण उनके पति नहीं आ रहे थे और कौशल्या देवी अकेले ही इलाहाबाद आ रही थी।

नीरा जब बाथरूम से नहाकर निकली तो देखा कि आलोक नाश्ता कर चुके थे और उँगलियों में काट की चामी घुमाते हुए बाहर जा रहे थे।

"सुमन जल्दी उठो" नीरा ने अपनी अठारह वर्षीय पुत्री को जोर से पुकारते हुए कहा "अब एक घण्टे में तुम्हारी दादी आती होगी। उन्हे यह बिल्कुल पसंद नहीं है, कि कोई इतनी देर तक सोता रहे।"

"आई मम्मी" सुमन ने अपने कमरे से बाहर निकलते हुए कहा "अब इम्तहान को पंद्रह दिन ही रह गये हैं। रात को देर तक पढ़ना, पढ़ता है। इसलिये सबेरे उठने में देर हो जाती है।"

"चलो नहाकर नाश्ता कर लो" नीरा ने सुमन से कहा "जबतक दादी रहें उन्हें शिकायत का मौका मत देना। आने पर पैर छूकर प्रणाम करना।"

सुमन ने स्वीकृति में सिर हिला दिया और बाथरूम की ओर चली गई। इस के बाद नीरा ने सभी कमरों में घूमघूम कर वहाँ की सफाई और व्यवस्था को देखना शुरू किया। पर जल्द ही उसका मन इस काम से ऊब गया। फिर उसने अपनी सहेली आशा वर्मा को मोबाईल फोन लगाया।

"हैलो आशा" नीरा ने कुछ बुझे हुए स्वर में कहा! "आज मै किटीपार्टी नहीं आ सकूँगी।"

"क्यों क्या हुआ" उधर से आशा की आवाज आई "तुम नहीं रहोगी तो सारा प्रोग्राम चैपट हो जायेगा। मै तो इसीलिये जा रही थी कि तुमसे वहाँ मुलाकात होगी। तुम तो जानती ही हो कि मिसेज झा को चार घण्टे झेलना मेरे लिये कितना मुश्किल काम है।

"क्या करूँ" नीरा ने कहा "कल ही कौशल्या चाची का फोन आया कि वह बीस दिनों के लिये आज ही इलाहाबाद आ रही है। दो चार दिन की बात होती तो कोई समस्या नहीं थी। लेकिन बीस दिन उनका यहाँ रहना तो घर का ही जेल हो जाना है। तुम्हीं लोग बीच-बीच में यहाँ आते रहना।"

"इसके लिये तुम चिंता न करों" उधर से आशा की आवाज आई "यह तो हमलोग पिछली बार ही देख चुके है, कि वह कितनी पुरातन पंथी है। सिर से जरा आँचल सरका नहीं या ब्लाऊज थोड़ा छोटा हुआ कि नहीं उनका भाषण शुरू। पता नहीं इस जमाने में भी वह कितनी पुरानी प्रथाओं को पकड़े हुए है।"

"अब उन्हें कौन समझाये" नीरा ने कहा ! "कुक के हाथो का खाना नहीं खायेगी। सुबह-सबेरे उन्हें रामायण का पाठ सुनाओं। फिर उनकी पूजा का सामान सजाओं। फिर नाश्ता बनाओं। मेरा तो दिल ही बैठा जा रहा है। अच्छा बाद में बात करूँगी। बाहर कार रूकने की आवाज आ रही है।"

फिर नीरा ने फोन काट दिया और बरामदे में आ गई। देखा कि ड्राईवर कार का दरवाजा खोल रहा है और कौशल्या देवी उतर रही है। नीरा ने सामान अंदर रखने के लिये कहा और फिर कौशल्या देवी के पैर छुए। कार की आवाज सुनकर सुमन बाहर निकली। उसने भी अपनी दादी के पैर छुए। कौशल्या देवी ने दोनों को आर्शीवाद दिया और ड्राईंग रूम में सोफे पर बैठ गई।

"आलोक तो ओफिस में ही उतर गया कौशल्या देवी ने कहा ! "कह रहा था कि कोई जरूरी मीटिंग है।"

"कोई बात नहीं" नीरा ने कहा "चलिये आप नाश्ता कर लीजिए।"

नहीं आज तो मेरा व्रत है। कौशल्या देवी ने कहा! "मै नहाकर आराम करूँगी। रात में केवल फलाहार करूँगी। कल सुबह "कुंभ" स्नान को जाऊँगी। इसके बाद ही अन्न ग्रहण करूँगी। नीरा ने स्वीकृति में सिर हिला दिया फिर बाथरूम का गीजर आन कर दिया। कौशल्या देवी ने अपने कमरे में आकर अपने कपड़े निकाले और नहाने के लिये बाथरूम में ची गई।

सबेरे चार बजे ही कौशल्या देवी उठ गई। आलोक ने कार निकाली और नहाने के लिये घाट पर कौशल्या देवी के साथ आ गये। "कुंभ" स्नान के बाद उन्होंने इलाहाबाद के अन्य पवित्र मंदिरों के दर्शन किये। फिर वे लोग घर आ गये। देखा तो नीरा टेबुल पर नास्ता लगा रही थी। पास में ही कुक और महरी खड़े थे।

"इतने नौकरों की क्या जरूरत है तुम्हें "कौशल्या देवी ने नीरा से कहा ! तुम लोग तीन ही तो आदमी हो। अपना खाना खुद ही बनाना चाहिये।"

नीरा ने कुछ नहीं कहा। नाश्ता करने के बाद कौशल्या देवी आराम करने के लिये अपने कमरे में चली गईं।

बीस दिन नीरा ने किसी तरह मन मारकर निकाले। बाहर निकलना बिल्कुल बंद हो गया था। बीच-बीच में नीरा की सहेलियाँ उनसे और कौशल्या देवी से मिलने चली आती थी, लेकिन वे ज्यादा देर तक नहीं रूकती थी। सुमन भी अपने कमरे में बैठी पढ़ती रहती थी। उसका इम्तेहान था, जो सिर पर आखिर वह दिन भी आ गया, जब कौशल्या देवी के बीस दिन पूरे हो गये और वे मेरठ चली गई।

"हैलो आशा" उनके जाने के दूसरे दिन ही नीरा ने आशा को फोन किया "चलो बला टली। पता नहीं कैसे मैने ये दिन निकाले। मुझे तो लगता था, कि मेरा दम घुट जायेगा। पता नहीं ये कब तक अपने पुरातन पंथी विचारों से जकड़ी रहेगी। रसोईयाँ मत रखो। मार्केट मत जाओं। रोज दो घण्टे पूजा करो। इनते नौकरों की क्या जरूरत है।"

"कोई बात नहीं" आशा ने कहा "अब तो तुम आजाद हो। परसो हमलोगो ने पिकनिक का प्रोग्राम बनाया है। दस बजे घर से निकलना है। पाँच बजे तक लौट आयेंगे। सुमन को भी साथ ले लेना।

"अच्छा" नीरा ने प्रसन्न होते हुए कहा "बहुत अच्छा प्रोग्राम है। सुमन को भी साथ चलने के लिये कहूँगी। वह भी तो इतने दिनों से बाहर नहीं निकली है।"

लेकिन सुमन ने साथ चलने से इन्कार कर दिया। उसने कहा कि उसे पढ़ाई करनी है और इम्तेहान सिर पर है।

आखिर पिकनिक का दिन भी आ गया। नीरा ने सारे सामान कार में रख दिये और ड्राईवर को कार निकालने के लिये कहा ! वह फिर से सुमन के कमरे में गई।

"तुम भी साथ चलती तो अच्छा रहता" नीरा ने कहा।

"नहीं ममी, मुझे पढ़ाई करनी है। वैसे मेरी भी बहुत इच्छा है कि साथ चलती" सुमन ने कहा लेकिन क्या करूँ कोर्स कंपलीट करना है।

फिर नीरा ने कुछ नहीं कहा और कार में बैठ गई। ड्राईवर ने कार स्टार्ट कर दी। बरामदे में खड़ी सुमन कार को गेट से बाहर जाते देखती रही। फिर वह अपने कमरे में चली आई।

लेकिन कार थोड़ी ही दूर गई थी कि नीरा को याद आया कि वह अपना पर्स और मोबाईल तो सुमन के कमरे में ही भूल आई है। उसने ड्राईवर को कार वापस ले चलने के लिया कहा ! घर पहुँचने पर उसने कार को गेट पर ही रोक दिया और धीरे-धीरे चलते हुए वह बरामदे को पार कर सुमन के कमरे तक आ गई।

वह सुमन को आवाज देने ही वाली थी कि उसके कानों में सुमन की आवाजें आई जो किसी से मोबाईल पर बातें कर रही थी।

"हाँ प्रवीर" सुमन किसी से मोबाईल पर बाते कर रही थी।

"जल्द ही यहाँ आजाओं। हमलोग चार बजे तक फ्री है और अपनी मर्जी के मालिक है। तुम्हें क्या बताऊँ कि मेरी मम्मी कितने पुराने विचारों की है। इन्हे लड़के-लड़कियों का मिलना-जुलना बिल्कुल पसंद नहीं है। इन्हे क्या मालूम कि जमाना बदल गया है और कितना आगे बढ़ गया है। लेकिन ये लोग नये जमाने और नई बातों को समझना ही नहीं चाहते... "नीरा को अपना सिर चक्कर खाता हुआ महसूस हुआ। उसे समझ नही आ रहा था कि क्या करें और क्या न करें। सुमन के कमरे में जाये या नहीं। पृथ्वी की रफ्तार के साथ दुनिया बदलती जा रही थी और जमाना बदलता जा रहा था।

आस्था का कुम्भ प्रयाग

मानव को मानव बनाने हेतु जितना चिंतन, मनन आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से शिक्षा संस्कार एवं चारित्रिक विकास का प्रयास, कथा, सत्संग, भक्ति, तत्व चर्चा, शास्त्रार्थ आदि की निरंतर चलती परम्पराएँ.. जो उपनिषदों एवं वैदिक ऋचाओं के युग तक पीछे जाती हैं, यह सिद्ध करती हैं कि मानव मस्तिष्क में उठने वाले विचार, भावनाएँ,इच्छाएँ, आसक्ति, द्वंद्व... सभी एक सागर के समान हैं। इस विचार, भाव और मानवीय प्रकृति से भरे सागर का मंथन जितना भारत भूमि पर हुआ उतना संभवतःबहुत कम स्थानों पर हुआ होगा। संभवतः यही समुद्र मंथन है। अच्छाई (देवता)और बुराई (राक्षस)दोनों पर दृष्टि रखते हुए किसी पर कुछ भी थोपे बिना वैचारिक स्वतंत्रता को बनाए रखते हुए परम्परा की कठोर भूमि (कछुए की पीठ), सुमेरु पर्वत की मथनी (गहन स्थिर मान्यताएँ) और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रतीक मथनी घुमाते हुए आती-जाती रस्सी (शेषनाग) की मदद से गहन विमर्श (मंथन) किया गया।

निष्कर्ष रूप में जो आया अमृत (आस्था एवं आत्मविश्वास) कहलाया। अमृत से भरा कुम्भ यानी कलश जहाँ-जहाँ रखा गया या जहाँ-जहाँ उससे आम जन को परिचित करवाया गया वहीं-वहीं कुम्भ लगता आ रहा है। युगों-युगों से यह आस्था और आत्मविश्वास की गंगा निरंतर प्रवाहित हो रही है।

इस बार प्रयाग आस्था का प्रतीक बना है। सम्पूर्ण विश्व से आस्थवान और आत्मविश्वास से सराबोर मानव सनातन परम्परा का पालन करते हुए वहाँ एकत्रित हुए हैं। स्नान, यज्ञ, लीला मंचन, कथावाचन... आस्था और आत्मविश्वास के वाहक बन मानव को मानव बनाने के सनातन सदप्रयास में लीन हैं

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

हास्य-विनोद

राजेन्द्र श्रीवास्तव

प्रतीक्षा, आने वाले कल की,..!

डाक बाबू अर्थात पोस्टमेन साहब के हाथ में हमारे नाम का रंगीन व आकर्षक लिफाफा देखकर हमारा दिल बल्लियों उछलने लगा। इस बीच हमारी मन:स्थिति से बेखबर एक आठवाँ आश्चर्य हमारे हाथ में थमाकर डाकबाबू जिस गली से आये उसी गली से वापस चले गये।इससे पहिले हमने ऐसा लिफाफा देखा तो क्या सुना भी नहीं था। अत्र कुशलम् तथास्तु,शेष कुशल जैसे सामान्य संवाद युक्त पारिवारिक पोस्टकार्ड ही, बाढ़, सूखा अकाल आदि में शासकीय अनुदान जैसे कभी-कभी मिल जाया करते थे।

इस अजूबे को देखकर एकबारगी लेटरबम की आशंका हृदय तो क्या पूरे शरीर को हिला गई। फिर यह सोचकर डर को बाहर निकाला कि अपन अदना से टीचर अपना कौन दुश्मन। न किसी ट्यूशनर से ज्यादा फीस ली, न किसी नकल करते बच्चे को पकड़ा। बापू के तीनों बंदर एक साथ इस अकेले इंसान में विद्दमान हैं। हमारे परिवार में भी किसी भी पीढ़ी में न कोई ठेकेदार रहा न जन प्रतिनिधि, जो अपने कामों से बातों से बैठे ठाले समाज का अनिष्ट करता रहा हो। फिर भी अनेक कल्पित -अकल्पित चेहरे आँखों के सामने आ गये। विशेषकर वे चेहरे जिनकी उधारी का थैला घर के खूटे पर लटका कर हम भूल चुके थे। उनके तकाजे और हमारे झूठे आश्वासन यथावत चल रहे हैं।

काँपते हाथों से जब लिफ़ाफ़ा खोला तो तमाम आशंकाएँ निर्मूल साबित हुईं।

मन स्थिर किया और मज़मून पर आँखें गड़ा दी।

मोती जैसे तो नहीं हाँ काले काले अक्षरों में टाइप किया था- "महोदय आपका भाग्य बस कुछ ही दिनों में चमकने वाला है। सतर्क रहिये कुछ ही दिनों में आपको एक लिफ़ाफ़ा और मिलेगा जिसमें कैद है आपका भाग्य। बस दिल थाम कर प्रतीक्षा कीजिये उस आने वाले सुनहरे कल की।

पढ़कर हमने दिल तो नहीं माथा अवश्य थाम लिया। लिखने वाले को क्या पता कि हमारा भाग्य तो बहुत पहिले हमारी श्रीमती जी के हाथों कैद हो चुका है। लिफाफा में बम भले ही कैद हो जाय हमारा भाग्य या हम नहीं। अब इन्हें कौन समझाये,ऐसा कोई गहरी सफाई वाला वाशिंग पावडर बना ही नही जो जिद्दी दागों से भरी पड़ी हमारी तकदीर को चमका सके।

खैर जिन सज्जन ने हमे 'महोदय' जैसी उपाधि से नवाजा हो, उन्हे बुरा-भला कहना अपनी मर्यादा के खिलाफ मान हमने चुप्पी साध ली और आने वाले लिफाफा की प्रतीक्षा करने लगे। गर्मियों में आधे-अधूरे यहाँ-वहाँ से लाये गये नगरपालिका के सौजन्य से भेजे गये पानी के टैंकर की भी इतनी बेसब्री से हम प्रतीक्षा नहीं करते जितनी अब उस लिफाफे की कर रहे थे। हमारे प्रतीक्षारत नयन व हमारी अनकही छटपटाहट पत्नी व बच्चों के लिये चिंता का सबब बन गई। सी.बी.आई. जैसी खुफिया जानकारी प्राप्त करने के लिये दोनों बेटे बब्बू और डब्बू 'दो जासूस' बन कर पीछा करने लगे। हम उनकी करतूतों से अनजान पीढ़ियों की परम्परा निभाते घर से स्कूल और स्कूल से घर का रास्ता नापते रहे। बेचारों का दो दिन में ही जासूसी का बुख़ार उतर गया।

प्रतिदिन उषाकाल से ही आशा की किरण प्रतिपल चमकती-बुझती सायंकाल अंततः नैराश्य के अंधकार में विलीन हो जाती। पोस्टमेन हमे जनप्रतिनिधि तो क्या ईश्वर से भी बढ़कर नजर आने लगे।

कहते हैं लगन सच्ची हो तो ईश्वर भी दौड़े चले आते हैं। हमारी सच्ची लगन से प्रसन्न होकर या अपने कर्तव्य पथ पर चलने के आदी पोस्टमेन महोदय भी एक दिन आये और चिर-प्रतीक्षित लिफ़ाफ़ा हमे थमा कर बगल वाली गली में ओझल हो गये। इस बार निर्भीक होकर हमने लिफ़ाफ़ा खोला,लेकिन उसमें से भाग्य जैसी कोई वस्तु प्रकट नहीं हुई। अलबत्ता दो-तीन प्रिंटेड पेपर फड़फड़ाते हुये बाहर निकल आये,जो बारबार आग्रह कर रहे थे कि एक बार हमें अवश्य पढ़ें। बिल्कुल उसी तरह जैसे चुनाव में अभ्यर्थी का आग्रह कि एक बार वोट देकर हमे अवश्य परखिये।

कुर्सी पर धम्म से विराजमान होकर हमने पहले पेज को पढ़ना शुरु किया। अब तक हम प्रेषक का पता पढ़कर यह तो जान ही चुके थे कि हमारे भाग्य का निर्माण करने का निर्णय करने वाले महोदय एक तथाकथित साहित्यिक मासिक पत्रिका के संपादक हैं। पहली पंक्ति पढ़कर ही हमारा मन आश्चर्य से भर गया। लिखने वाले की बुद्धि पर भी तरस

आया। लिखा था- "महोदय आप अपने शहर के विचारवान एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। इसलिये हम आपको पुरस्कृत करना चाहते हैं।"

हमने उस पंक्ति को बारबार पढ़ा पर विश्वास न हुआ। विचारवान हम बेचारे कब से बन गये? समझ ही नहीं पा रहे थे। साहित्यिक प्रतिभा का जहाँ तक प्रश्न है तो इस क्षेत्र में अपनी उपलब्धि मात्र इतनी ही है कि प्राय: सभी पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों द्वारा हमारी मौलिक-अमौलिक रचनाओं को सखेद वापस भेजा गया है। साथ ही और अधिक रचनात्मक सुधार करने की अनेकानेक प्रेरणा व धन्यवाद के दो शब्द ।

आगे लिखा था-"हम आपकी प्रतिभा का सम्मान करते हुये आपको अपनी महत्वाकांक्षी पुरस्कार योजना में शामिल कर रहे हैं।

पढ़कर हम गदगद हो गये। जीवन में पहली बार ऐसे कदरदान व भाग्यविधाता संपादक से परिचय हो रहा था। संपादकों के प्रति बनी हमारी कुधारणा हमारी रचनाओं की ही तरह निर्मूल व निरर्थक साबित हो रही थी। हमने भी उनकी पुरस्कार योजना में शामिल होने का मन बना लिया। योजना भी हमारे अनुरूप ही थी। अंतिम पृष्ठ पर बने चौकोर खानो में एक से नौ के बीच के अंक तीन-तीन के समूह में इस तरह भरना था कि प्रत्येक पंक्ति का योग पंद्रह आये।भगवान की दया से चौथी पाँचवी में पढ़ा गणित आड़े वक़्त में काम आ गया। एक दर्जन

असफल प्रयासों के बाद सही संख्यायें भर ही दीं।

डाकखर्च की विकट समस्या का अनुमान संपादक जी को रहा होगा इसलिये डाक टिकट लगा लिफ़ाफ़ा साथ में ही भेज दिया था। हमने आनन-फानन कूपन लिफ़ाफ़ा मे बंद कर उसे लाल डिब्बे के हवाले कर दिया।

हम जानते हैं कि कुछ दिनों बाद ही एक रजिस्टर्ड बण्डल हमारे पास आयेगा। दो-तीन पुरानी पत्रिकाओं के बीच फँसा एक मनीआर्डर फार्म मुस्कराता नजर आयेगा। यहाँ-वहाँ से जुगाड़ कर हम निर्धारित राशि का ही मनीआर्डर भेजेंगे, हम एक जानी पहिचानी तथाकथित प्रतिष्ठित, पठनीय व ज्ञानवर्धक पत्रिका के नियमित ग्राहक बन जायेंगे।

आप भले ही हमें मूर्ख समझें पर हम अपनी ही नजरों में जाने-माने विचारवान एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति बन जायेंगे । प्रतीक्षा है उस आने वाले कल की...

नियति

सेठ हकिम चंद के हँसते खेलते परिवार को मानो नज़र लग गई थी। सेठ जी को अपने बच्चों पर बड़ा नाज़ हुआ करता था।

वे हमेशा कहते रहते थे सबसे । मेरे तीनों बेटे मेरी शान है। बहुएँ भी बहुत सुशील थी उन्हें अपनी बहुओं पर भी बहुत नाज़ था।

पूरे शहर में बहुत नाम था उनका। एक दिन उन्होंने बच्चों को बुलाया कहा अब मैंने बहुत काम कर लिया। सारा काम काज अब तुम तीनों को सौंपता हूँ। अब मैं थक चुका हूँ। थोड़ा आराम चाहिए ।

बेटों के लिए पिता की आज्ञा शिरोधार्य थी । सभी ने अपनी अपनी ज़िम्मेदारी बख़ूबी निभाने का पिता से वादा किया।

पर ये क्या???!!!

जब सेठ जी बैठ के खाने के दिन आए आराम के दिन आए तो वो ख़ुशी ईश्वर से बर्दाश्त नहीं हुई।

सेठ जी के बड़े बेटे की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई । मानो सारे परिवार पर पहाड़ टूट पड़ा हो।

कुछ ही दिन नहीं बीते थे कि छोटे बेटा हृदयघात से स्वर्ग सिधार गया । सेठ जी का तो रो रो के बुरा हाल था। सेठ जी बार बार एक ही बात कहे जा रहे थे। उम्र तो मेरी थी भगवान जाने की, मुझे क्यों नहीं उठा लिया । सभी उन्हें यही समझा रहे थे नियति के लिखे को कौन टाल पाया है सेठ जी। होनी तो होकर रहती है। हमारे या आपके कहने से कुछ नहीं होता।

अदिति रूसिया, वारासिवनी

प्रतीक्षा

आज एक हफ्ता हो गया था चार दिन बाद लौटकर मिलता हूँ कह कर गया अनिरुद्ध अभी तक वापस नही लौटा था।वसु हर पल टकटकी लगाएं उसका इंतज़ार कर रही थी। निर्धारित समय तक तो वह प्रतीक्षा करती रही पर जब समय बीतने लगा तो वह बैचैन हो उठी। अनिरुद्ध ने भी कोशिश नही की की उसे एक बार देरी की वजह बताने की। बैचैन दिल और नम आँखे लिए वसु सिर्फ इंतज़ार ही कर सकती थी।और कोई चारा भी तो नही था। कई शंकाओ से घिरी वसु सिर्फ एक ही दुआ मांग रही थी की वज़ह जो भी हो अनिरुद्ध के न लौटने की पर वह जहाँ भी हो सलामत रहें।एक एक दिन भारी होता जा रहा था।पर उस बेफ़िकरे को उसकी लेश मात्र भी चिंता नही थी। तरह तरह की शंकाओ से घिरी वसु उसकी सलमति की दुआ मांग खुद को नियंत्रित करने की भरसक कोशिश कर रही थी।नम आँखे प्रतीक्षा रत खुली खिड़की से रोज सूरज का आना जाना देख उस गोधुली की प्रतीक्षा में सिर्फ अनिरुद्ध के पुकार की चाह में दिन व्यतित कर रही थी।

जानती थी उसकी प्रतीक्षा व्यर्थ नही जाएगी....!

सुरेखा स्वरा

सिफारिश

नेहा को पूरा भरोसा था की ये जॉब उसे ही मिलेगा क्योंकि आये हुये सभी प्रतियोगीयों से उसकी प्रोफाईल बहुत अच्छी थी और उसे इस काम का थोड़ा अनुभव भी था। इन्टरव्यू भी बहुत अच्छा हुआ था। सभी लोग उससे बहुत प्रभावित नजर आ रहे थे। मिस मालविका ने तो उसे बोल ही दिया था कि बस ज्वाईनिंग की औपचारिकता बची है, जॉब उसका ही है|

एक दिन अचानक उसी कंपनी के लिए किसी कम योग्यता वाले का नाम कॉलेज के नोटिस बोर्ड पर देख नेहा सन्न रह गई। लगा किसी ने थाली परोस के छीन ली है| किसी तरह हिम्मत जुटा कैंम्पस रीक्रूटमेंट सेल में जा कर पूछा कि ऐसा कैसे तो जवाब मिला "उसके चाचा के दोस्त फलाना मंत्री है| चिंता न करो बेटा तुम तो बहुत काबिल हो, तुम्हें तो पच्चीसों नौकरियां मिल जाएंगी!"

आज उसका पच्चीसवा इंटरव्यू है और हमेशा की तरह किसी कम योगिता वाले कैंडीडेट का चयन रिक्रूटर के फोन बजने के कारण हो गया| नेहा ने अपना बैग उठाया और बाहर की तरफ चल दी।

नमिता दुबे

संक्रांति

रोहन जल्दी उठ जाओ! देखो सूरज भी निकल गया । ओहो! मम्मी, वो तो रोज़ ही निकलता है लेकिन मेरे कॉलेज की छुट्टी तो कभी-कभी ही होती है... इतना कहकर रोहन ने कम्बल सिर तक ओढ़ लिया। लेकिन बेटा आज मकर संक्राति है, हमारा त्योहार है और आज के दिन जल्दी उठना और नहाना शुभ माना जाता है।

माँ तुम्हे पता है न कि छुट्टी के दिन मैं न जल्दी उठता हूँ और न नहाता हूँ फिर भी तुम हर साल मुझे परेशान करती हो....रोहन कम्बल में से मुँह निकालकर बोला।

तुम आजकल के बच्चे भी न... ठीक है! जो मर्ज़ी आए करो... इतना कहकर उसकी माँ कमरे से बाहर निकल गई।

उनके जाते ही रोहन का फ़ोन बजा.. हेलो ! रोहन ने कहा...

सामने से उसके दोस्त की आवाज़ आई... "भाई रोहन दस बजे तक आजा, फिल्म का प्लान है",,,

नहीं आयुष आज मेरा सोने का मूड है, देर तक.... रोहन बोला

"लेकिन शिखा भी आ रही है" उसके दोस्त ने कहा...

क्या शिखा भी ? ये सुनते ही रोहन कम्बल फेंक खड़ा हो गया ... और बोला चल ठीक है मैं मिलता हूँ आधे घंटे में... कमरे से निकलकर वह सीधा किचन में गया और माँ से एक कप चाय बनाने के लिए कहा.. माँ उसे देखकर खुश हो गईं और कहा "वाह! मेरा बेटा उठ गया... तो रोहन ने कहा- हाँ! माँ हमें अपने त्योहार और संस्कार का ख्याल रखना चाहिए... त्योहार मनाने चाहिए... और खिखिखिखी करके हँसने लगा ।

वाह! मेरा राजा बेटा! माँ खुश होते हुए बोली.... जा तू नहा ले मैं चाय के साथ खिचड़ी और तिल-गुड़ भी देती हूँ...

हाँ, माँ! बस अभी आया और रोहन तौलिया लेकर बाथरूम में चला गया ।

प्रिया यश

आगामी कार्यक्रम

वारासिवनी, जिला बालाघाट (मप्र) में (रुकने की व्यवस्था निःशुल्क रहेगी)

अन्तरा शब्दशक्ति साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान योजना

*32 पृष्ठ की पुस्तक (एकल संग्रह)

*50 प्रतियाँ

*अन्तरा शब्दशक्ति का
साहित्य स्वाभिमान सम्मान

*विमोचन एवं सम्मान समारोह 15 मई से 30 मई के बीच वारासिवनी में आयोजित किया जाएगा।

*रचनाएँ केवल मंगल फॉन्ट/यूनिकोड में ही टाइप की हुई मेल द्वारा ही स्वीकार की जाएगी। साथ ही हस्ताक्षरित पत्र सकैन करके भेजें जिसपर लिखा हो कि सभी रचनाएँ मौलिक हैं और किसी भी विवाद की स्थिति में केवल रचनाकार जिम्मेदार है)

मनपसंद विधा में 32 पेज की isbn सहित पुस्तकों के लिए रचनाएँ भूमिका एवं अनुक्रमणिका सहित भेजें

*छायाचित्र और अधिकतम 200 शब्दों में परिचय।

नाम
जन्मतिथि व स्थान
शिक्षा
प्रकाशन
सम्मान
ईमेल
फोन/मो.
संपर्क

*सहयोग राशि paytm या बैंक खाते में भेजनी है।

ईमेल :- antrashabdshakti@gmail.com पर रचनाएँ एवं मौलिकता प्रमाण पत्र स्वीकार किये जाएंगे।

अंतिम तिथि 25 फरवरी

आयोजक

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

अंतरा शब्दशक्ति

(सृजन शब्द से शक्ति का)

1 फरवरी 2016 को 13 महिलाओं के एक व्हाट्सअप समूह से की गई शुरुआत जिसने सृजन फुलवारी से सृजन शब्द से शक्ति का सफर तय करते हुए अन्तरा-शब्दशक्ति का स्वरूप लिया।

अन्तरा शब्दशक्ति एक ऐसा सृजन मंच जो शब्द से शक्ति का विस्तार करके हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार के साथ-साथ स्त्री शक्ति, युवा शक्ति और नवांकुरों के साथ-साथ स्थापित रचनाकारों की विविध विधाओं में निहित रचना प्रतिभाओं को एक मंच पर लाकर वैश्विक स्तर पर लाने हेतु प्रयासरत है। अंतरा-शब्दशक्ति, वेबसाइट, मासिक वेबपत्रिका (ई मैगजीन), समाचार पत्रों में प्रकाशन के माध्यम से तथा सप्ताह का कवि विशेषांक (एक कवि का परिचय रचनाओं सहित हर रविवार सार्वजनिक मंच पर समीक्षा हेतु प्रस्तुत) वेबसाइट, फेसबुक पेज, फेसबुक ग्रुप और व्हाट्सअप ग्रुप के माध्यम से वृहद पर रचनाकारों को जनमानस से जोड़ता है।

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन के माध्य से साझा संकलन, स्मारिकाएँ, समीक्षाएं आदि भी प्रकाशित करवाकर प्रतिभाओं को सामने लाने का सतत प्रयास जारी है। साझा संकलनों, लघु पुस्तिकाओं और पुस्तकों का प्रकाशन भी किया जाता है। 25 मार्च 2018 को प्रकाशन पंजीकृत हुआ तब से अब तक 230 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी है। 2019 विश्व पुस्तक मेला में सम्मिलित हुए।

प्रीति सुराना
संस्थापक:-अन्तरा शब्दशक्ति

खोजें अपने पाठक

१६ पृष्ठ या ३२ पृष्ठ की पुस्तिकाओं से

जी हाँ, वर्तमान दौर में हिंदी के रचनाकारों की समस्या होती है कि उनकी किताबें बिकती नहीं, प्रकाशक भी इसलिए नवांकुरों को प्रकाशित नहीं करते क्योंकि प्रकाशक को भी विक्रय न होने का भय रहता है। ऐसे स्थिति में नवांकुर कैसे खोजे अपने पाठक ?

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन लाया है अद्भुत विकल्प-मात्र १६ या ३२ पृष्ठ में आपकी रचनाएँ आई एस बी एन (ISBN) क्रमांक के साथ ई-बुक बनवाये, कम प्रतियाँ प्रकाशित करवाएँ और अपने पाठक स्वयं खोजे। जो पाठक की जेब के लिए बोझिल नहीं होगी, और जब आपके पाठकों को आपका लेखन पसंद आएगा तो वे आपकी पुस्तकें भी खरीद कर पढ़ेंगे और इससे आय भी होगी।

- आई एस बी एन
- पाठशोधन
- आवरण अभिकल्प
- ई-बुक
- पुस्तक विमोचन
- प्रचार प्रसार

संपर्क करें

डॉ. प्रीति समकित सुराना

+91- 90094 65259 | +91- 94247 65259

antrashabdshakti@gmail.com

www.antrashabdshakti.com

सेन्स समूह का उपक्रम

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन क्रान्ति का आरंभ

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की यात्रा

- प्रथम अन्तरा शब्दशक्ति से सृजन शब्दशक्ति सम्मान 2017 भोपाल में आयोजित जिसमें विमोचत हुआ साझा संग्रह।
- द्वितीय अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2018 इंदौर में आयोजित जिसमें विमोचत हुए 8 साझा संग्रह और 1 एकल पुस्तक।
- महिला दिवस 2018 में विमोचित हुए वूमन आवाज साझा संग्रह, जिसमें शामिल रही 50 से अधिक महिलाएँ।
- लघु पुस्तिका क्रान्ति का आरंभ हुआ सृजन समीक्षा से, जिसमें 49 किताबों का हुआ विमोचन।
- इतिहास में हिन्दी आन्दोलन का बालाघाट में विमोचन।
- भोपाल में आयोजन हुआ वूमन आवाज अवार्ड का जिसमें 55 महिलाओं की 66 पुस्तिकाओं का विमोचन।
- मातृभाषा उन्नयन संस्थान के सहयोग से हिन्दी आन्दोलन को समर्पित 8 पुस्तिकाओं सहित 5 अन्य पुस्तकों का विमोचन।
- दिल्ली में अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2019 के आयोजन में 60 से अधिक पुस्तकें विमोचित व रचनाकार सम्मानित।
- दिल्ली में मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019 के आयोजन में 30 से अधिक पुस्तकें विमोचन और रचनाकार सम्मानित

- मात्र ११ माह की अवधि से सेवारत
- दौ सो अधिक किताबें प्रकाशित
- ५०० से अधिक सम्मानित लोग
- १५० से अधिक एकल पुस्तिकाएँ
- लगभग १५ आयोजन इन ११ माह में
- ५ स्थायी अन्तरा शब्दशक्ति के सम्मान